कनौजिया काका

कनौजिया काका

उपन्यासकार
डॉ. अमरेन्द्र

अंगिका संसद
सराय . भागलपुर

ISBN : ९७८-८१-९६१४४६-५-४

प्रथम संस्करण
२०२३

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ रूपये मात्र

Kanaujiya Kaka (Angika Novel)
Dr. Amrendra Rs.100/-

अंगिका कला के मर्मज्ञ विद्वान

ज्योतिषचंद्र शर्मा

के स्मृति में

जिनकों हृदय में बच्चो-बुतरू लें

एक पनसोखावाला दुनियाँ छेलै!

—अमरेन्द्र

ई उपन्यास लेली

एक दशक सें भी पहिलकों बात छेकै। हिन्दी आरो पंजाबी के प्रख्यात क्याकार जसवंत सिंह विरदी जीं हमरा शांता ग्रोवर के लिखलों एक किताब भेजलें छेलै—'दस गुरु साहिबान'। ऊ किताब पढ़ी कें हम्में सोचलें छेलियै, हेनों किताब अंगिकाहौ में होना चाही। फेनु ई बात ऐलों-गेलों होय गेलै।

कुछ सालों के बाद भागलपुर आकाशवाणी लें हमरा अंगप्रदेश पर धारावारिक रूपक-लेखन लें आमंत्रण मिललै, तें ई प्रदेश के हाथी के विशेष प्रसंग एक खंड में ऐलै। हमरा लगलै—अंगप्रदेश के हाथी पर बच्चा लेली एक पुस्तक होना चाही, ऊ भी अंगिकाहै में। मतर यहू बात मेटाय चललों छेलै कि हठासिये एक समय में दोनो किंछा एक साथ प्रबल होय उठलै। समस्या यहू आवी गेलै कि पहिले ऊ लिखौं कि पहिले ई। आखिर में ई बात मनों में ऐलै कि दोनों कें मिलाइये कें कैन्हें नी बच्चा लेली एगो उपन्यास रची देलों जाय। काम कठिन छेलै, मतर काम करनाहै छेलै आरो फेनु १६ सितम्बर २०२२ यानी जितिया पर्व के पहिलों दिन ई उपन्यास कें लिखनाहौ शुरू करी देलियै । ठीक छठ पर्व के चौथों दिन एकरा पूरो करी देलियै।

आबें ई केन्हों बनलै, ई विद्वाने बतैतै। जों नहियों बाल-उपन्यास बनें पारलें होतै, तहियो हमरा ई बात लें संतोष छै कि मनों मे जे इच्छा पूरा होय लें सालो सें कुदक्का मारी रहलों छेलै, आबें ऊ पालथी मारी कें चुप्पे रहतै!

—अमरेन्द्र

सम्पर्क : लाल खां दरगाह लेन
सराय, भागलपुर, बिहार, पिन-८१२००२
मोबाइल :-८३४०६५०६७८, ९९३९४५१३२३

जेठौन एकादशी
४ नवंबर २०२२

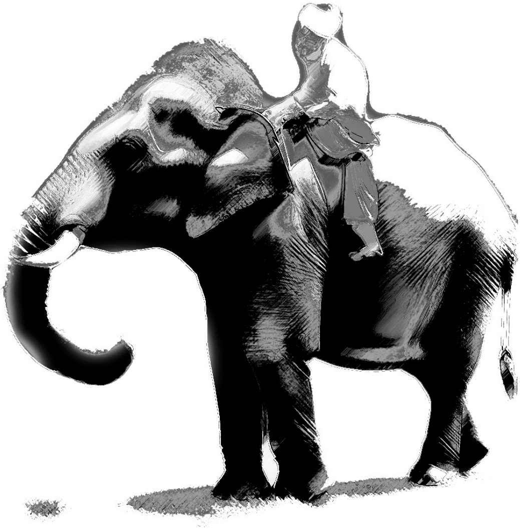

कनौजिया काका

कनौजिया काका जाय तें रहलों छेलै मँहगी महतो कन ही, है जानै लें कि दू दिन बीती चुकलों छै–आखिर की बात छै कि नै ओकरों तीनो बच्चे तेतरी, पंचु, बंटु हमरों बखारी दिस टुघरलों छै, नै तें मँहगी महतुवे । कि तभिये हुनी दू बाँस के दूरी पर दू बच्चा कें माँटी कोड़तें देखलकै ।

''अरे ई तेतरी आरो पंचुए छेकै, पड़पड़िया रौदी में ई दोनो माँटी में की खोजी रहलों छै ?'' ई सोचथैं हुनी मलकी कें वहीं ठां पहुँची गेलै आरो कनौजिया काका कें हठासिये अपनों नगीच ठाढ़ों देखी कें तेतरी आरो पंचु स्प्रिंग के पुतला नाँखी एक झटकाहै सें उठी खाड़ों भै गेलै। दोनो नें कुर्ती-कमीज आरो पैंट अपनों-अपनों हाथों सें झाड़ी कें एक्के साथें गोड़ छूवी प्रणाम करलें छेलै। काका 'खुश रहो, खुश रहों' कहलें तें जाय रहलों छेलै मतर हुनकों ध्यान वै दोनो पर नै; सामना के खच्चुए पर बेसी छेलै। खच्चो के लंबाई-चौड़ाई देखतें हुनका रहलों नै गेलै, ते हँसतें हुएँ बोललै, ''अरे पंचू, तोहें है की करी रहलों छैं! एत्तें बड़ों एक हाथ के खच्चो कथी लें खोदलें छैं रे! से की ताड़ गाछी के डंटा आरो खजूरी गाछी के गिल्ली बनाय के गिल्ली-डंडा खेलवैं ? कुँवर विजयमल बनै लें चाहै छैं की ? विजयमल वास्तें चालीस मोंन के गिल्ली आरो अस्सी मोंन के डंडा बनवैलों गेलों छेलै। है बात जानै छैं की नै ?'' आरो ई कही कें कनौजिया काका खिलखिलाय के हँसी पड़लों छेलै।

रुकलै, तें हुनकों नजर मँहगी के बेटी तेतरी के दोनो हाथों पर पहिलें पड़लै जे झाड़ला-पोछला के बादो अभियो मटमैले छेलै। आबें हुनकों मुँहों पर हो हँसी नै छेलै। तेतरी के दोनो हथेली कें अपनों बायाँ हाथ में लेकें दायाँ हाथ सें हौले-हौले झाड़तें कहलकै, ''आरो तोहें भाय

के कामों में मदद करी रहलों छैं। एत्तें बड़ों खच्चो पंचू तोरा सें खनवाय लेलकौ। घंटा भरी सें खानतें होभैं। वहू खुरपी-खंती सें नै—है हाथ भरी बाँसों के खपछी सें! तेतरी छेकैं नी! तीन भाय के पीठी पर ऐलो छैं—भाय, माय, बाबू सबके वास्तें भगमंती, तें भाय के कामों में मदद केना नै करवैं! कर-कर! तेतेरिये होला के कारणें तें गाँव भरी मानवो करै छौ। जानै छैं; घोर अकालों मे जनमलों छेलौ तोरों बाबू। मँहगी सरंगों पर चढ़ी गेलों छेलै आरो वही मँहगी समय में तोरों बाबू धरती पर ऐलौ, तें तोरों दादीं पोता के नामो रखी देलकौ मंहगी। मंहगी के भाग्य बदलना शुरू होलै, तें समझें तोरों जनमे के बाद! तोरों जनमथैं तोरों बाबू कें गाँव के पंचायत-भवन के देखरेख वास्तें नौकरियो मिली गेलौ।''

अपनों प्रशंसा सुनी कें तेतरी कटी-टा मुस्कैलै, फेनु कुछ उम्मीदों में काका दिस देखलकै, कि पंचुओ वास्ते हुनी कुछ कहतै मुदा प्रशंसा की करतै; हुनी पंचू के माथा पर हाथ फेरतें कहलकै, ''सिधंगड़ी बहिन पैलें छैं, ते खूब खटवाय छैं, तोहें तें मुकुर-मुकुर खाली खच्चो देखी रहलों छेलैं, आरो यें बेचारी खपच्ची सें खद्दो खानिये रहलों छै, माँटी निकालिये रहलों छै, तें कथी लें कुछ करना। कटी-टा तोहें अपनों तरत्थी देखैं—केन्हो साफ-सुथरा छौ; जना पनघट साबुन सें धोय के ऐलों रहें। जरा सोचें, जों दोनो मिली कें खानतियैं, तें एत्तें देरो नै लगतियौ।'' कहतें-कहतें काकां खच्चो के नगीच आवी कें हैरत सें पुछलें छेलै, ''पहिले ई तें बताव कि एत्तें बड़ो खच्चो खानै के तोरा जरूरते की पड़लौ? तोहें अपनों घुटना के आधों तें खोदवैये लेलें छैं। खच्चो खानी रहलो छैं की पोखर ?''

काकां भले कोय भावों सें कहलें रहें मतर पोखरवाला बात सुनी कें दोनो कें हँसी आवी गेलै। तेतरी तें अपनों मुँहों पर दोनो तरत्थी रखी कें खिलखिलाय पड़लों छेलै, मुदा अपनों गलती बुझी कें पंचु बेसी देर हँसें नै पारलों छेलै आरो छन्है बाद ओकरों चेहरा पर दोषी होय के भावो तनी गेलै, जेकरा भाँपै में काका कें कटियो-टा देरी नै लगलों छेलै। फेनू की छेलै, हुनी झट सना पंचू के दोनो काँखी में अपनों दोनो हाथ डालतें ओकरा उठैलकै आरो बायां कंधा पर बिठाय लेलकै। कंधा पर बैठै भर के देर छेलै कि ओकरों चेहरा गेंदा फूल-रं खिली गेलै। आबें है डेड-बेड़

सें कुछ तें होन्है छेलै। हुन्नें काका के कान्हा पर बैठी कें पंचू के गुदगुदैवों आरो हिन्नें तेतरी के मुँहों सें खिलखिलाहट के गायब होवों दोनो साथे-साथ होलों छेलै। तें, काका कें जना ई होय के भनक पहिले सें रहें, से कहलकै, "तोरों वास्तें एक ठो कंधा खाली छै नी! चल्लों आबें दायां कंधा पर तोहें बैठ" आरो ई कही कें बायां हाथ कें पंचू के पीठ पर रखतें हौले-हौले आधों सें बेसी ठेहुना बल्लों बैठी गेलै आरो तेतरी कें दायां ठेहुना पर गोड़ रखी कें कंधा पर बैठी जाय के इशारा करलकै। फेनू की छेलै—जेना तेतरी एकरे आसों में रहें। ऊ झट सना एक दाफी बायां गोड़ के पंजा के धुरदा दायां गोड़ में सटाय कें पोछी लेलें छेलै आरो दायां गोड़ के पंजा के बायां गोड़ से सटाय कें आरो काका के दायां हाथ के सहारा पावी जाँघी पर गोड़ धरतें दायां कंधा के दोनो दिस गोड़ लटकाय बैठी गेलों छेलै।

"दोनो हमरों माथों कें धरनें राखियें। आबें हम्में उठै छियौ।" ई कही काकां अपनों हाथ के दोनो पंजा दोनो ठेहुना पर जमैलें छेलै आरो एकदम आहिस्ता-आहिस्ता, बिना कटियो-टा मूड़ी झुकैलें, ठाढ़ों भै गेलों छेलै।

फेनु दोनो के पीठी पर अपनों दोनो हाथ साटलें मंहगी महतो के दुआरी दिस लंबा-लंबा डेग मारलें बढ़ी चललै ।

"अच्छा ई तें बताव पंचु, हमरों कंधा पर बैठवों केन्हों लगी रहलों छौ ?" काकां दोनो के चुप्पी तोड़ै के ख्यालों सें पुछलें छेलै मतर पंचु कें समझहै में कुछ नै आवी रहलो छेलै कि एकरो वैं की जवाब देतै कि तभिये तेतरी बोली पड़लै, "हम्मे कहियौं काका—तोरो कन्हा पर बैठवों केन्हों लगी रहलों छै।"

"हों-हों, तोंही बोल! पंचु तें फेल होय गेलै।"

काका के हों बोलना छेलै कि वै हरखित होतें बोललै, "तोरों कन्हा पर बैठी कें हमरा होने बुझाय रहलों छै; जेना कि तोरा हाथी पर बैठी कें बुझैतें होथौं।"

तेतरी के उत्तर सुनी कें कनौजिया काका कें जेना गुदगुदी लगी गेलों रहें। खिलखिलाय कें हँसी पड़लै। ओकरों जवाब सुनी काका कें हँसतें देखी तेतरियो एत्ते खुश होय गेलै कि वहू खुशी में काका के माथा

पर ताल ठोकें लगलै। ऊ तें पंचु मुँहो पर अंगुरी रखी कें मना करलें छेलै, तें ओकरा अपनों गलती के गियान होलों छेलै।

काका अभियो भीतर सें गुदगुदाय रहलों छेलै। फेनु अपनों हँसी पर काबू पैतें बिना तेतरी दिस देखले पुछलें छेलै, ‘‘तें, की हमरा तोहें हाथी पर चढ़लों कभियो देखलें छैं ? हम्में तें तोरा कभियो नै देखलियौ कि तोहें हमरा देखी रहलों छैं।’’

‘‘तोहें कहाँ सें हमरा देखवौ—हाथी की बकरी-छकरी छेकै जे ओकरों लुग पहुँची जइयै। हाथी सें हमरा बड्डी डॉर लगै छै, यही सें घरों के झडोखे सें तोरा हाथी पर चढ़लों देखी लै छियौं—जबें भी पिछवाड़ीवाला बँसबिट्टी सें गुजरै छौ।’’

‘‘अच्छा, कभी तोरो मोंन करै छौ कि हम्में हाथी पर चढौं ?’’

ई बोलना छेलै कि तेतरी हेने नै-नै करें लगलै; जेना ओकरा हाथिये पर चढ़ाय लेली काकां पकड़लें होलों छै। ‘‘काका हमरा नीचें उतारी दा! आबें हम्में पैदले घोंर चल्लो जैवों।’’ तेतरी बोली पड़लै । ओकरा यहू गियान नै रही गेलों छेलै कि काका के घोंर तें पुवारी टोला मे पड़ै छै आरो ओकरों घोंर तें पछियारी टोला में छै—जन्नें काका जाय रहलों छै। दोनो टोलो के बीच तें बीस बाँस के दूरी छै आरो काका के हाथी तें हुनकों दुआरी सें बाँस भरी दूरे बरों गाछों सें बँधलो रहै छै—वहू में खूब मोटों लोहा रों सीकड़ सें। ई सब बात वैं अपनो बाबू सें जानलें छै।

मँहगी ओकरा ई बात तबें बतैलें छेलै, जबें वैं नद्दी दिस सें ऐते हाथी के चिग्घाड़ सुनी एकदम डरलों-डरलों बाबू सें पुछलें छेलै, ‘‘बाबू, काका के हाथी हिन्नौ तें आवें पारें।’’ तखनी बेटी कें गोदी में लेतें मँहगी ओकरा बतैलें छेलै, ‘‘बेटी, ऊ हिन्नें आव्है नै पारें । ऊ तें मोटों सीकड़ सें बँधलों होतै। सीकड़ तभिये खुलै छै, जखनी कनौजिया काका खोलै छौं।’’

तेतरी कें बाबू के बतैलों बात याद ऐथैं पुछलें छेलै, ‘‘काका, आय तांय हाथी कभी दौड़ैलें छौं आरो डरों सें घरों में जाय कें नुकैलों छौ।’’

तेतरी के बात सुनी कें काका फेनु हँसलों छेलै आरो हँसथैं-हँसथैं

कहलें छेलै, ''जो हाथी उमताय जाय आरो केकरो पीछा करें, ते घरे मे नुकैला सें की होयवाला छै। वहू में जबें गामो में सबके घोंर मॉंटिये-फुसों के होय छै। हाथी कें घोंर तोडै में कत्तें देर लगतै! एक बात जानी ले—जों कोय उमतैलों हाथी पिछुआवें, तें घरों में नुकाय जैवों आकि गाछी पर चढ़ला के बदला घरों के बाहर आग जराय देना चाही।''

''तबें तें हाथी के आरो सुझाय पड़तै कि कोन घोंर कन्नें छै आरो के कैन ठां नुकैलों आकि कोन दिस भागी रहलो छै'' तेतरीं जरा झुकी कें काका के मुँह दिस देखतें बोललै।

''नै-नै, हेनों बात नै छै'' एक तें हाथी कें बहुत दूर तांय दिखैवो नै करै छै—फेनु रौशनी में ओकरा आरो कम सुझावें लगै छै।''

''तें, जे जंगले के बीचो में रहै छै, वैं की करतें होतै?'' तेतरीं फेनु पुछलकै ।

''वही करै छै। रात होलों, तें दुआरी के बाहर आग जराय कें छोड़ी देलकों आकि सब हाथों में लुक्का लेलें हल्ला करें लगतों। फेनु हाथी कभी नै ऐतों।'' काकां बोललें छेलै ।

''ओ, आबें बुझलियै कि हुन्नें परसबन्नी में गन्हौरी काका आरो सिरचन बाबा कैन्हें राती आग जरैनें राखै छै। हमरा तें हमरों टिकली दीदीं यहा बतैलें छेलै कि सिरचन बाबा आरो गन्हौरी काका बड्डी गरीब छै नी, यहा सें राती लकड़िये जराय कें घोंर इंजोर करै छै। अच्छा काका, लकड़ी तें तभैं जरैतें होतै, जबें हाथी बस्ती में घुसी जैतै होतै, मतुर लकड़ी जरै में तें बहुत देर लगै छै। तब तांय तें हाथी बस्तिये रौंदी कें चल्लों जैतै।''

''कहलैं तें तोहें ठिक्के। यही विपत्ती सें बचै लेली तें जंगलवाला बस्ती के लोग घरों में हेनों गोयठों रखै छै, जेकरा में सुक्खा मिरचाँय भरलों रहै छै। हाथी के भनक लगलों कि वही मिरचाँयवाला गोयठों बस्ती के हिन्नें-हुन्नें जराय देलकों। भला मिरचाँय के गंधवाला धुआँ हाथी बर्दास्त करें पारें। उल्टे पाँव भागी जाय छै।''

काका सें ई बात सुनथैं दोनो एकदम खिलखिलाय कें हँसी पड़लै। हँसी रुकलै, तें तेतरी बोललै, ''जंगल के लोगें ई विद्या जरूरे हमरी माय सें सिखलें होतै। मइयो दाली में दै लें जबें पँचफोरन साथें

सुक्खा मिरचाँय पकाय छै, तें हमरासिनी भनसाघोंर छोड़ी कें सीधे ऐंगनो भागी जाय छियै।''

तेतरी के बात सुनी कनौजिया काका मुस्कैलों छेलै आरो रुकतें हुएँ ठेहुनों पर पंजा बल्लों चुकुमुकु बैठी गेलों छेलै। काका कें हेना बैठथैं देखी दोनो कें चेत होलों छेलै कि ऊ अपनों घरों के दुआरी पर छै। ई देखथैं दोनो कान्हा सें हेनों ससरी कें नीचें आवीं गेलै, जेना ससरौआ सें ससरतें रहें।

''कहाँ छैं, मँहगी ?'' काकां टनकों गल्ला सें बोललों छेलै ।

कनौजिया काका के आवाज सुनना छेलै कि मँहगी महतो लपकलों बाहर ऐलै आरो कहलकै, ''दादा तोहें! ई दोनो कहाँ मिली गेलौं। दुपहरिये निकललों इखनी दिखाय पड़लै। आवों, ऐंगनो आवों नी।'' ऐंगनों दिस इशारा करतें मँहगी बोललै ।

''इखनी नै। बेरा झुकी रहलों छै। घरो निकलना जरूरी छै। हाथी के खाना-पानी तें हमरै देना रहै छै। हों, एक बात, कल ई दोनो कें हमरा कन लेलें अइयैं। हाथी पर नै चढतै, तें नै; नगीच सें देखतै तें।'' आरो ई कही काका लंबा डेग मारलें पुवारी टोलों दिस बढ़ी गेलै।

।। दू।।

अभी फरचों ठीक सें होलो नै छेलै, कि छपरी पर बगरो के चीं-चीं आरो कौआ के काँव-काँव सुनी कें मँहगी महतो खटिया सें उठलै आरो सीधे तेतरी-माय के कोठरी नगीच आवी कें ऐगन्है सें कहलकै, ''पंचू आरो नानकी उठलौं की नै ? आय कनौजिया दां बुलैनें छै। यहू कहले छै कि पंचु-नानकीयो कें साथ लेलें आना छै। हुएँ पारें हाथी पर चढ़ाय कें गाँव भरी घुमैयो दै। हुनी मौज मे आवै छै, तें केकरो-नै-केकरो हाथी पर घंटा भरी तें घुमैये दै छै।''

''अरे यही डरों सें तें ई दोनो रात भरी की-की नी खुसुर-फुसुर

करतें रहलों छै। हों, नानकी हमरों लुग सुटियाय कें सुतै वक्ती कहलें छेलै, 'माय हमरा काका के यहाँ नै जाना छै। हुनी अपनों हाथी वास्तें सुखैलों मिरचाँयवाला गोयठों रखलें छै—अपनों हाथी कें डराय वास्तें, कि ऊ पगलावें नै। है बात झूठ नै हुएँ पारें। बौंसीवाली पर भूत ऐलों छेलै, तें ऊ मंतरिया मिरचैंये जराय कें नी ठीक करै छेलै। हम्में काका कन नै जैवौ—बाबू के कहलौ पर'', एक क्षण रुकतें तेतरी-मांय फेनु कहलें छेलै, 'आवी कें देखौ नी, दोनो की रं हमरे खटिया पर सुटियैलों बैठलों छौं।''

आरो मँहगी जेन्हे कोठरी मे ढुकलै कि तेतरी बोली पड़लै, ''बाबू, हम्में काका कन नै जैभौं।''

''से कैन्हें?''

''काकां कहलें छै, हाथी रगैदै छै, तें आदमी के बचना मुश्किल। गाछो पर चढ़ीयो कें बचना मुश्किल छै। होन्हौं कें हमरा गाछी पर थोड़े चढ़ै लें आवै छै।''

''अरे रे, रे, तोरा सिनी कें नै भागना छै, नै गाछी पर चढ़ना छै; खाली देखना छै कि बंटु की रं हाथी पर चढ़ी कें घूमी रहलों छै। बंटू भी तें तोरे सिनी के अपनों भाय छेकौ। ऊ कहाँ डरै छै। कल सँझकी बोललियै, तें तुरत 'हों' बोली देलकै आरो एक तोरा दोनो छैं, डरफुक्की-डरफुक्का। उठों तेतरी-माय, तीनो कें तैयार करवावों। आबें जैवै करवै, तें काका के भोरकों कामों में कुछ मददो करी देवै। घरो के काम फेनू पंचायत भवनो के काम। काम करतें आठ साल के बडों दिन कत्तें खाँटों होय जाय छै हुब-सना ऐलें आरो हुब-सना गेलों।'' एतना कहतें मंहगी ऐंगनो सें बाहर निकली गेलै।

घंटा भरी बाद जबें ऊ तीनो बेटा-बेटी कें लैकें पुबारी टोलों वास्तें घरों सें निकललै, तें रस्ता भरी तीनो कें समझैतें गेलै, ''तोहें हाथी देखै में डरै छै आरो हम्में तें यहा सुनलें छियै, काका जखनी बीस सालों के होतै नी, तखनिये हुनी हाथी पर चढ़ी कें लाहौर देखै लें दिल्ली जातरा पर निकली गेलों छेलै। लाहौर बुझै छैं यानी पाकिस्तान। तखनी तें पाकिस्तानो अपने देशों में नी छेलै।''

''है बात की सच छेकै बाबू!'' तेतरीं आँख फाड़ी-फाड़ी कें

मँहगी दिस देखलें छेलै।

"आरो नै तें की हम्मे झूठ कही रहलों खियौ। चल नी तोहें अपने सें पूछी लियैं।"

मँहगी देखलकै ओकरों बातों सें ओकरों डॉर जेना कुछ-कुछ गायब होय गेलों रहें कैन्हें कि एकरों पहिलें ओकरों जे गोड़ एकदम छोटों-छोटों उठी रहलों छेलै—वही मलकी-मलकी आगू बढ़ें लगलों छेलै।

जखनी मँहगी महतो कनौजिया काका के सीधे हथसार पहुंचलों छेलै, तखनी हुनी मुलायमवाला नारियल के छिलका सें हाथी के देह-हाथ हौले-हौले रगडवो करी रहलों छेलै। मँहगी आरो तीनो बच्चा पर नजर पड़लै, तें तेतरी कें देखतें बोललै, "देखैं, केन्हों मजा सें देह-हाथ धोलवाय रहलों छै। तोरा सिनी कें नहवाय में तें माय के नाको दम करवाय देतें होवैं।"

काका के बात सुनलकै, तें तेतरी मुस्कैतें हुएँ पंचु आरो बंटु दिस देखलकै—जना ईशारे-ईशारा में कहतें रहें—हमरा सें बेसी तें तोरा दोनो माय नहवावै वक्ती परेशान करै छैं।" बात के बुझतें हुएँ पंचु नें अपनों ठोरों पर तर्जनीवाला औंगुरी कें रखतें चुप्पे रहै के इशारा करलें छेलै।

जबें हाथी के देह, गोड़, सूँढ़ रगड़ला के बाद बाल्टी-बाल्टी पानी सें हाथी कें नहवैलें छेलै, तें काका तीनो बच्चा कें नगीच आवी कें कुर्सी पर बैठी रहलै। मँहगी तें बुतरू समेत पहिले बाँस भरी दूरी पर मड़ैया के नीचें बिछेलों चौंकी पर काका के इशारा पावी जमी चुकलों छेलै।

"दादा" कुर्सी पर काका के बैठना छेलै कि मँहगी बोललै "एकरा सिनी कें आचरज लगै छै कि तोहें यही हाथी पर बैठी कें लखनऊ-अजोधा तांय चल्लों गेलों छेलौ। आबें तोंही बताय दौ, कि हम्में झूठ बोललियै कि सच ?"

"की पुरनका बात याद दिलाय देल्हैं। झूठ कहाँ बोललै, मँहगी? तखनी तोरों उमिरे होतें होथौ दस बरस आरो हम्में छेलियै बीस सालों के। तोरा याद होतौ, एक सरदार साधु अपनों भगवती थानो में महीना भरी लें ठहरलों छेलै। गाँव के लोगो सें जे मिली गेलों, वही में संतुष्ट। मतर केकरो दुआरी पर सुतवों-बैठवों नै। हुनकै सें हम्में नानक बाबा के बारे में सुनलें छेलियै। खाली नानक बाबा के बारे मे ही नै, गुरु अंगद

देव, गुरु अमर दास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविन्द, गुरु हरिराय, गुरु हरिकृष्ण, गुरु तेग बहादुर आरो गुरु गोविन्द सिंह जी के बारे में भी एक सें एक्कीस कहानी सुनलियै। रोज सँझकी वक्ती हुनकों लुग बैठी जइयै। मँगनी में अमृत मिलें, तें के छोड़ें! आरो देखें, हो सब कहानी सुनै के असर। सोची लेलियै सब गुरु के जन्मस्थान जाय के देखना छै। आशीर्वाद लेना छै। जवानी के हूब छेलै आरो हाथी तें बापों के किनलों छेवे करलै। सोची लेलियै हाथिये पर चढ़ीकें नानक बाबा के जन्मस्थान तक हो ऐवै मतलब कि आयकों पाकिस्तान के लाहौर तांय।''

कि तखनिये सूँढ़ उठाय कें हाथीं शंखों के भारी आवाजे नाँखी आवाज देलकै, जे सुनी कें पंचु, बंटु और तेतरी डर के मारे एक दोसरा सें सट्टी गेलै।

''अरे, अरे, डरै के कोय बात नै छै। नहैलकै नीं, आबें एकरा कुछ खाना चाहियों; वही बताय रहलों छै। अभी तुरत आवै छियै, जरा एकरों मुँहों में हाथीभोग तें राखी दियै'' आरो ई कही काका वैंठा सें उठलै। नगीचे में बनलों एक छोटों रं कोठरी में झुकी कें ढुकलै आरो दोनो हाथों में गोबर के बड़ों लादों हेनों कुछ लैके हाथी लुग ठाढ़ों होय गेलै। काका के नगीच आना छेलै कि हाथीं अपनों सूँढ़ ऊपर करलकै तें काकां ऊ गोला ओकरों सुरंग नाँखी मुँहों में रखी देलें छेलै, फेनु बगले में रखलों बाल्टी में हाथ धोय कें वहा कुर्सी पर आवी कें बैठी रहलै।

''काका हाथी के मुँहों में गोबर राखलौ की ? की हाथी गोबर खाय छै ?'' तेतरीं पुछलें छेलै।

''अरे पगली, हाथी के भोजन कें गोबर के लादों कहै छैं। जानै छैं, जेकरा तोहें गोबर के लादों बुझी रहलों छैं—वैमें की-की छै; चौर, भूसों, पकलो केला, साथे पीपर के पत्ता, घास, बेसन, गूड़, आरनी सें बनैलों हाथीभोग छेलै, जे एक्के दाफी में गटकी कें केन्हों मस्त होय गेलों छै। आबें कुछ देर हेन्है कें मस्ती में सूँढ़ हिलतें रहतै।''

''तें, एत्तें बड़ों हाथीभोग खैला के बादो एकरा भूख लगी जैतै?''

''आरो नै तें की? तोहें छों सालो के छैं। दस सेर सें तोरों वजन कम नै होतौ आरो हाथी के वजन जानै छैं कत्तें छै ? छों हजार किलो सें

कम नै होतै। ई दिन भरी में सोलह-अठारह घंटा खैतें रहै छै आरो जानै छैं; कुल मिलाय कें कै सेर पत्ता आकि हाथीभोग खाय जाय छै—दू सौ किलो सें बेसी। एक किलो एक सेर सें होवै करै छै, कत्तें कम; बस जरे टा वजन में कम होय छै ।''

''बाप रे बाप !'' पंचु के मुंहों सें निकललै।

''बाप रे बाप, की! देखै नै छै एकरों पेट!''

''तें पेटों में रखतें होतै कहाँ?'' बंटु जिज्ञासा सें पुछलकै।

''तें, दिन भरी हगतो होतै होने ?'' पंचु बोललै, तें तेतरी मुँह पर दोनो हाथ रखी कें हंसलै, वही नै, एक दाफी सब हँसी पड़लै मतुर अपनों हँसी कें तुरत्ते रोकतें काका बोललै, ''बोलै छैं तें ठिक्के। आरो जानै छैं, यैं कत्तें पानी पियै छै, पचास लीटर सें बेसीये। आबें तें ई बुढ़ाय चललै। सत्तर साल सें कम नै होतें होतै।''

''कैन्हें नी होतें होतै ! तोरे तें अस्सी सें बेसी होय चल्लो होथौं दादा!'' मँहगी महतों कहलकै।

''गलत नै बोललैं। जखनी एकरा पूर्णिया मेला सें कीनी कें बाबूं आनलें छेलै, तखनी ई पाँच साल के होतै आरो तखनी हमरों उमिर पनरों साल के होय रहलों होतै आरो तहिये सें ई हमरों साथ छै। हमरों एक-एक इशारा कें यैं समझै छै आरो हम्में एकरों एक-एक बोली कें। पहिलें नकुल बाबा के महावतें हमरा एकरों साथ बोलै, व्यवहार करै के तरीका बतैलें छेलै, फेनु तें जल्दिये सब कुछ सीखी लेलियै। देखैं, सूँढ़ उठैलकै आरो ई रं सूँढ़ उठाय के मतलब छेकै—पानी माँगी रहलों छै'' तें काका वहाँ सें उठीकें कुइयां लुग गेलों छेलै आरो एक कूड़ पानी खीची कें कूड़ ओकरों आगू करी देलकै।

सबके आँख हाथिये पर जमलों होलों छेलै। जखनी वैं सूँढ़ कें कूड़ सें बाहर निकाललें छेलै, तें काकां खाली कूड़ कें तेतरी-पंचु आरनी दिस देखै लें करी देलें छेलै। देखना छेलै कि तेतरी के मुँहों सें निकललै, ''बाप रे, सब पीवी गेलै, एक्के सुरे!''

काकां फेनु कुरसी पर आवी के बैठी गेलै। बंटु बोललै, ''बाप रे बाप! काका, हाथी एत्तें पानी पीयै छै?''

''दिन भरी में पैतालीस सें पचास लीटर तांय पानी पीवी जाय

छैं, हों। गर्मी दिनों में लगभग दुगना।''

सुनी कें तेतरीं बंटू दिस एक दाफी देखतें काका सें कहलकै, ''मतर बंटु तें गर्मियो दिन में छोटकुनिया गिलासों सें चार दाफी पीवी लै, तें यही बहुत।''

''यही सें तें एत्तें रोगी हेनों दिखाय पड़ै छै, एकदम सुस्त। पानी तें छोटों-छोटों जीव-जंतु सें लैकें हाथी हेनों जानवरो वास्तें जरूरी छै; तभिये तें भगवाने धरती के तीन हिस्सा कें पानिये सें भरी देले छै कि जीव कें पानी के कभी कमीये नै हुएँ ।''

''काका, हौ देखौ, बिल्लैया-बच्चा हाथी के आगू सें निकली रहलों छै—ओकरा मारिये देतै।'' तेतरी के ध्यान हठासिये बिल्ली-बच्चा दिस चल्लों गेलों छेलै।

''नै नी मारतै। हाथी एकदम शाकाहारी जानवर होय छै। बाँस खेलकों, महुआ खेलकों, गहुम खेलकों; भला हेनों शाकाहारी जीव कें बेकार के गोस्सा कहाँ सें होतै; ओकरो में पालतू हाथी कें तें आरो नै। खाय के तें जंगलियो हाथी यहा सब खाय छै, मतर जंगली हाथी के ताकत ई पालतू हाथी सें कहीं बेसी होय छै। बंधलों-खुल्ला हाथी में तें अंतर होवे नी करै छै। तबें हाथी तें हाथिये होय छै, बंधलों पालतू रहें कि जंगली। धरती पर एकरा से बरियो आरो कोय जानवर नै होय छै।''

''जबें हेनों बात छै, काका, तें ऊ हाथी के गोड पकड़ी कें घडियालें पानी में केना खीचें लगलों छेलै, जेकरा विष्णु भगवाने बचैलें छेलै?'' तेतरीं काका दिस होते बोललों छेलै।

''तोहें ई कहानी केकरा से सुनलें?''

''माय सें।''

''पहिले तें ई जानी ले कि हाथी के गोड़ घड़ियालें नै, मगरमच्छें पकड़लें छेलै। 'सात समुन्दर, तेरह नद्दी' किताब नै पढलें छैं। पढ़तियैं तें जानतियैं कि माँसाहारी घड़ियाल नै, मगरमच्छ होय छै। दोनो देखओ में अलग किसिम के होय छै। तें, बात ई छेकै बेटी कि मगरमच्छ पानी में रहैवाला ताकतवर जीव छेकै, जेकरों मुकावला करना मुश्किल आरो हाथी जमीन पर रहेवाला जीव छेकै, जेकरों शरीर आरो ताकत के मुकाबला आरो जीव की, सिंहो नै करें पारें, जे जंगल के राजा कहाय छै। तें, बात

रहलै मगरमच्छ आरो हाथी के। एक तें हमरा नै लगै छै कि वैं हाथी के गोड़ धरी कें खिंचतें होतै। एक गोड़ धरतियै, तें हाथी दोसरों गोड़ सें रौंदी देतियै। हाथी ताकत के नगीच ओकरों ताकते की! हों मगरमच्छ हाथी के सूँढ़ जबें पकड़ी लै छै, तें हाथी एकदम विचलित होय उठै छै। तभियो हाथी ओकरों एकदम्मे वशों में होय जाय छै, हेनो बात नै छै। हाथीं सूढ़े सें ओकरा ऊपर उठाय कें पटकी-पटकी मारी दिएँ पारें । जमीनों तांय खींची कें लातों सें कुचली कें मारी दै छै। मतर कै दाफी हेनों होय छै कि हेनों लड़ाय में हाथी कें अपनों सूंड़ गंवाय लें पड़ी जाय छै आरो घाव नै छुटलों, तें हाथी मरौ पारें। आरो एक बात जानी लें, हाथी के जत्तें बड़ों माथों देखै छै नीं, ओत्तें ओकरों बुद्धियो बड़ों। कोय बात एकरा याद खूब रहै छै। जों कोय मगरमच्छ एकरा चोट पहुँचैलकों, तें मौका देखी कें हाथी बिना ओकरों जान लेलें नै छोड़ै।''

''काका, तोहें जोंन जंगली हाथी के बात करलौ, तबें तें ओकरों ताकते रं ओकरों दाँतो आरो बड़ों-बड़ों होतें होतै? नाना तें हेने कहलें छेलै ।'' तेतरी के जिज्ञासा बढले जाय रहलों छेलै।

''होतियै तें एकरो, जों ई नर हाथी होतियै। बड़ों-बड़ों दाँत खाली नर हाथिये के होय छै। मेदी के छोटों-छोटों—जेहनों एकरों छै।''

''तें, तोहें नर हाथी कैन्हें नी पोसलौ ?''

''पोस मानै छै, तें मेदिये हाथी नी; यही सें। घरों में देखतें होभैं, बाबू तें कभियो-कदाव गोस्सैवो करतें होथों मतर मांय तें हमेशे दुलारे करतें होतौ।''

काका के ई बातों पर तेतरी कुछ नै बोललों छेलै, नै आगु कुछ पुछलें छेलै। ई देखी कें काकां मँहगी सें बोललै ''मंहगी, मालदों आम तोड़ी कें रखलें छियै। पकलों-पकलों आठ-दस ठो, लै लियें आरो जब तांय छै, रोजे लै जइयें। घरों में खैयेवाला के छै। दू पूत छेलै—कोय अमेरिका, कोय इंगलैंड। मूर्खें रखतियै, तें अच्छा। अपने हाथों घोंर उजाडलें छियै, तें देवों के की दोख दियै। रोजे बच्चा-बुतरू कें भोरे-भोर लै आनलों कर—जब तांय मालदों गाछी में आम छै।''

काका के बात सुनी मँगनी कुछ मनझमान होलै, तें काकां फेनु कहलकै, अरे बैठलों की छैं। बच्चो सिनी कें ऐंगनों लै जो। पुबारी कोठरी

में आम पालों पर रखलों होथौ । हम्में चललियौ–जरा डुबकी कें नद्दी दिस घुमाय ऐइयै...की डुबकी घुमै लें चलवैं?'' काकां अपनों हाथ कें इशारा करतें पुछलकै, तें हाथियो सूँढ़ उठाय के शंख नाँखी आवाज करलकै।

''देखैं, हों बोललै। जो, आम लइये कें जइयें आरो यहा वक्ती कल यहाँ आवी जाना छै–की तेतरी'' तेतरी के माथा पर काकां हाथ रखतें कहलें छेलै ।

''एकदम काका। अभी तोहें बतैलौ कहाँ कि हाथीये पर बैठी कें अजोधा केना पहुँची गेलौ? कत्तें दिन लगलौं? जंगल में डोर लगलौं, की नै लागलौं ?''

''सब बतैवौ बेटी, सब । एकेक करी कें। दस दिनों के कहानी छेकै आरो अभी दस रोज गाछी में आमो रहतै। की पंचु-बंटू, केन्हों रहतै?'' काका के ई बात सुनी कें तीनो के चेहरा पर मुरकान फैली गेलों छेलै।

आरो फेनु सब्भैं देखलकै–काका हाथी के सूँढ़ के नगीच पहुँची गेलों छेलै। कुछ बोललों छेलै, तें हाथियो साँपो के फन नाँखी सूँढ़ उठाय लेलें छेलै, जेकरै पर गोड़ धरतें काका ओकरों गल्ला में पड़लों मोटों जंजीर कें पकड़ी लेलकै आरो हाथी के गर्दन पर, हाथिये मुँह दिस मुँह करी, बैठी रहलों छेलै। पंचु आरो बंटु ई सब देखीकें एकदम दंग छेलै, मतर तेतरी ठाढ़ों होयकें काका के ई विजय पर तब तांय खूब थाली पिटलें छेलै, जब तांय हाथी देखथैं-देखथैं आँखीं सें ओझल नै होय गेलों छेलै।

॥ तीन ॥

''बाबू, जैवौ नै काका कन ? कबूतर सिनी भाँड़ी में गुटरें लगलों छै आरो बरों गाछी पर बगरओ सिनी।'' तेतरी के बोली सुनी कें मँहगी

एकदम खुश होतें बोललै, ''एकदम जाना छै। वहाँ सें लौटै में कुछ अबेरो होय जैतै, तें की हरजा। मुखिया जी कें कही देवै—नूनू सिनी कें लैकें दादा कन जाय छियै। जो, तोहें तैयार होय जो आरो पंचु-बंटुओ कें कही दें, तैयार होय लें।''

चारो आय जल्दिये काका-घोंर पहुँची गेलों छेलै कैन्हें कि आय तीनो लगभग दौडले जाय रहलों छेलै आरो ओकरा सिनी के साथ चलै में मँहगी कें लम्मा-लम्मा डेग मारै लें पड़लों छेलै।

तेतरी, पंचु आरो बंटू कें देखथैं काका बोललै, ''आवें, आवें, मैना, सुग्गा, कबूतर! तोरे तें इंतजारी में छेलां। यही सें आय पहिले डुबकी कें नहवाय देलें छियै, खिलाइयो देलें छियै। सब किसिम सें निश्चिन्त। जमी कें बैठ आरो जे-जे पुछना छौ—पूछ!''

''काका, तोहें कल कहलौ कि हाथी मगरमच्छो सें बेसी बरियों होय छै, तें की, ई बाघो-सिंह सें बेसी बरियो होय छै ?'' सबसें पहिलें तेतरीये थोड़ों आगू खिसकी कें बोललों छेलै।

''आरो नै तें की। कलके बात तें छेकै—अपनों बिहारो के पश्चिमी चम्पारण के बगहा गाँव केरों बात। बीस-पच्चीस रोजों में सातो-आठ आदमी कें बाघें मारी देलकै, तें सरकार के आदेश भेलै कि बाघों कें मारी देलों जाय, तें हाथिये पर चढ़ी कें बाघों के पीछा करलों गेलै आरो बाघ मारलों गेलै। बाघ-सिंह हाथी के बच्चा कें नोचें-भमोरें पारें, हाथी कें नै। वहू हथनी या हाथी के रहतें की मजाल कि बाघ-सिंघे हाथी-बच्चा कें छुवियो लें। अफ्रीकी हाथी तें हेनों बरियों होय छै कि भैंसो तांय कें सूढ़ो सें उठाय कें पटकें पारें। अफ्रीकी हाथी के दाँतो डेड़-डेड़ हाथों सें कम नै होय छै—बेसियो होतें होतें, तें आचरज नै।''

''तबें तें ऊ आरो विशाल होतें होतें ?'' पंचु पुछलें छेलै।

''यैमें की की शक। कानो होने बड़ों-बड़ों।'' काकां दोनों पंजा अपनों दोनो कानों सें साटलें कहलें छेलै ।

''अच्छा काका, कल तोहें बोली रहलों छेलौ कि हाथिये पर चढ़ी कें पाकिस्तान दिस निकली गेलौ, तें कै दिनों में गेलौ आरो कोन दैके गेलौ, रस्ता में की-की देखलौ ?'' बंटु, जे अब तांय चुप्पे छेलै—बोललै।

''यहा सब तें सुनाय लें आय तोरा सिनी कें बोलैलें छियौ। तें

आबें तोरा सिनी जाँघ जोड़ी कें बैठी जो। हमरा जतना-टा जेना-जेना याद पड़लों जैतौं, सुनैलों जैभौ। तखनी देश के आजादी मिललों कम-सें-कम पाँच साल बीती चुकलों छेलै आरो हमरों उमिरे की होतें होतै—बीस साल के जरुरे होवै। हौ जेठ-बैशाखों के समय छेलै। हेनाकें समझें कि घोर तिक्खो रौदों के समय छेलै, जबें हम्में डुबकी के गर्दन पर बैठी, दिल्ली वास्तें निकली गेलियै।''

''हाथी पर सें की पाकिस्तान तुरत्ते पहुँची जाय छै?''

''से बात नै। तखनी है रं ट्रेन-मोटर थोड़े चलै छेलै। देश रहौ कि परदेश—लोग या तें हाथी-घोड़ा पर यात्रा करै, नै तें पैदले-पैदल।''

''आदमी ओत्ते दूर की पैदले जावें पारें?''

''जैवे करै छेलै। पतियैवैं, तोरों दादा पैदले गंगा सागर चल्लों गेलों छेलौ। हों, वहाँ पहुंचौ में महीना भरी तें लगिये गेलों छेलै।''

''काका, की सागरो में गंगा होय छै?'' तेतरीं आचरज सें पुछलकै।

''नै मैना, जहाँ गंगा सागर में मिलै छै—वही जग्घों कें गंगासागर कहै छै।''

''ओ!'' कही के ऊ चुप होय गेलों छेलै।

''तें, हम्में लाहौर पहुँचैवाला बात बताय रहलों छेलियौ। पहिले तें हम्में बरारीवाला गंगा पार करलियै।''

''तखनी की गंगा एकदम सुखलों छेलै?''

''नै, कम-सें-कम ढाई मरद पानी तखनियो गंगा में छेलै। तखनी की आयके-रं गंगा सुखै छेलै। इखनी तें जन्नें देखों, हुन्नै छाड़न, हुन्नै मरगांग।''

''तें एत्तें पानी में डुबकी डुबलै नै?''

''अरे, हाथी कें तोहें अपनों मटुकिया काका सें कम बुझै छैं। जेना मटुकिया काका चानन के बोहों में तैरी कें पार होय जाय छेलौ नी; होन्है कें हाथियो तैरी कें पार होय जाय छै। हाथी तें सौनो-भादो के गंगा पार करें पारें—ऊ ते जेठे-बैशाख के महिना छेलै। तखनी तें होन्हौ कें गंगा आधो रही जाय छै। बस यहा समझैं, कि जना बत्तख गर्दन उठैलें, की रं तैरतें पोखर पार करी जाय छै; होन्है कें ई डुबकी भी सूँड़ उठैलें

गंगा में हेली गेलै।''

''तें, तोरा डॉर नै लगलौं?''

''अरे पंचु, हम्में तें हाथी के हौदा पर बैठलों छेलियै, जे पानीवाला छोटों हौदे—रं बनलों छेलै। महावत तें नकुल बाबा के महावत छेलै। नै तें ओत्ते दूर की जावें पारतियै।''

''तबें की होलै?''

''तबें सीधे हाथी कें पूर्णिया जायवाला रस्ता पर करी देलों गेलै। जाना तें छेलै फारबिसगंज, मतुर रस्ताहै में पहिलें कटिहार आवै छै आरो वहाँ रुकना जरूरिये छेलै।''

''से कैन्हें?''

''जबें दस गुरु के जन्मस्थान देखै लें निकललों छेलियै, ते कटिहार के बरारी केना नै पहुंचतियै।''

''से कैन्हें काका?''

''तें सुन, सिक्ख पंथ के पहिलों गुरु गुरु नानक देव जबें पंजाब सें आसाम जाय रहलों छेलै, तें कटिहारे के बरारी खंडों में रहलों छेलै, तब्हें आसाम दिस निकललों छेलै। आबें सिक्ख पंथ के नौमों गुरु, गुरु तेगबहादुर सिंह जी कें ही ले, तें पंजाब जाय के क्रम में मुंगेर-भागलपुर होलें यहा कटिहारे में कै दिन रुकलों छेलै। फेनु दसमो गुरु, गुरु गोविन्द सिंह लेली अंग के ई खंड कत्तें पवित्र छेलै, ऊ तें यही बातों सें समझें पारें कि हाथों के लिखलों हुकुमनामा यहाँ भेजलें छेलै, जे हुकुमनामा केन्हो कें गंगा में गिरी पड़लों छेलै। आबें देखैं चमत्कार; हौ किताब कै महीना तांय गंगाहै के नीचें रहलै आरो जबे पानी कम होलै, तें ऊ किताबो निकललै मतर किताबों में कहीं कोय गड़बड़ी नै छेलै। गुरु गोविन्द जी के एक प्रमुख पंक्ति छेकै, 'जय अंगाली जय बंगाली' ।''

''बंगाली तें बुझी गेलियै; ई जय अंगाली की होलै, काका?''

''अपनों ई जे भागलपुर छेकै नी, तखनी अंग कहावै छेलै। बंगाल के सीमा कें छूतें हुएँ नेपाल के सीमा कें छूतें अंग क्षेत्र छेलै। ई अभियो होने छै। यही अंगप्रदेश छेकै—जेकरों महिमा वास्ते गुरु जी जय अंगाली बोललों छै।''

''ओ। आबें बुझलियै।'' तेतरी बोललै।

“तें हेनों सब गुरु के गोड़ो सें पवित्र होलों घरती पर माथों टेकना तें जरूरिये नी छेलै, मैना। हाथी के दूरे बान्ही कें हम्में आरो महावत काका घंटा भरी वही तीर्थस्थान पर तिरफेकन देतें रहलों छेलिये—तभिये फारबिसगंज दिस निकललों छेलियै।”

“फारबिसगंज कहाँ छै, काका?”

“पूर्णियै में। जंगल रों जिला कहों। भर रस्ता जंगले-जंगल। तखनी अपना यैठां गर्मी के लू छेलै, तें पूर्णिया में ठंडा-ठंडा हवा। बड्डी सुन्दर जगह छै, पूर्णिया। बस नेपाल सें सटले बुझें।

“काका, दादी बोलै छै कि सब नामों के पीछू कोय-नें-कोय कारण होय छै, ते पूर्णिया नाम के पिछुवो कोय कारण होतै?” तेतरी बिना रुकले पुछलें छेलै ।

“कहैलियौ नी। पूरा पूर्णिया जंगले सें भरलों। अरण्य मानी जंगल, तें पूरे जंगलवाला इलाका—पूर्णिया।”

“ओ!”

“जाय के तें मोंन नेपालो छेलै। सटले तें छै, मतर ध्यान में वहा लाहौर आरो ननकाना साहब छेलै, से फारबिसगंज सें सीधे मुजफ्फरपुर दिस महावत काकां हाथी कें घुमाय देलकै।”

“ई मुजफ्फरपुर कहाँ छै, काका?”

“एत्तें रही-रही कें टोकवे, तें जिनगी भर पंजाब नै पहुँचें पारवे। ई मुजफ्फरपुर अपने बिहारों में छै—पछियें दिशा में।.... अरे रुक-रुक, मुजफ्फरपुर के बातों पर हमरा लीची के ख्याल आवी गेलै। आय तोरों सिनी वास्तें पकलों आमों के साथ-साथ लीची तोड़ी कें राखलें छियौ।”

“से की मुजफफरपुर के लीची यहाँकरो गाछी सें बढियाँ होय छै?” बंटु पुछलें छेलै।

“वही अंतर होय छै, जे पकलों मालदों आरो बीजू आम में होय छै।” कही कें कनौजिया काका हँसलों छेलै आरो घोंर जाय कें गमछी में पचासो ठो लीची लै आनलें छेलै। कहलें छेलै “खाय कें देखैं तें पता लगतौ, की अंतर छै—यहाँकरों, वहाँकरों में। विदेश तांय मुकाबला नै करें पारें मुजफ्फरपुर के लीची के। वही सें कलम लानी कें यहां लगैनें छेलियै।”

फेनु मँहगी दिस देखतें बोललों छेलै, "आबें आगू के कहानी आय यही तांय। कल हमरा सिनी सीधे दिल्ली पहुँचै के कोशिश करवै; नै तें महीना भरी रस्ताहै में झुलतें रही जैवै। गमछी में सबटा लीची समेटी ले आरो है पाँच ठो आमो रखीं ले। आबें डुबकी कें हाथीभोगो दैके समय होय चललों छै। ओकरों खानाओ बनाय में ढेर समय लगी जाय छै नी।" ई कही कें काका उठलै, ते मँहगीयो अपनों गमछी के एक छोरों में लीची आरो दोसरों छोरों में आम बान्ही कें तेतरी, पंचु, बंटु के उठै के इशारा करलकै, । इशारा पैथैं तीनो उठलै आरो बाबू के घोंर पहुँचै के पहिले दरबन मारतें घोंर पहुंची गेलों छेलै।

॥ चार ॥

कनौजिया काकां पूरब दिस के सरंग देखलकै। भगवान दू बाँस ऊपर चढ़ी ऐलों छेलै आरो अभी तांय नै ते तेतरी, पंचु, बंटु के पता छेलै, नै तें मँहगीये के । आखिर की बात हुएँ पारें—काकां मनेमन सोचलें छेलै, तें उत्तरो निकालै में हुनका देरी नै लगलै—जरुरे मँहगी के कनियैनी आवै सें मना करलें होतै। कहलें होतै—रोजे-रोज वहाँ जाय छौ आरो एत्तें-एत्तें आम-लीची उठाय लानै छो। भला काकां मनों में की सोचतें होतै। खाली बच्चा जैतियै, तें वहीं हुनी खिलाय-उलाय देतियै। तोहें जाय छों तें.... बस मँहगी सोचलें होतै—तेतरी-माय ठिक्के कहै छै आरो ऊ नै ऐलै। ऊ नै ऐलै, तें बच्चो-बुतरूओ गायब। आबें हमरे जाय कें बोलाय लें लगें—आरो ई सोचथैं काकां कंधा से नीचें ससरी ऐलों जनेऊ कें ठीक सें सड़ियैलकै; गंजी ऊपर खादी के अधकट्टी बांहीवाला गंजी चढ़ैलकै; कंधा पर खद्दरवाला गमछी रखलकै; फेनु हाथों में कोय चीजों सें भरलों एकटा झोलियो आरो खड़ाऊँ पिन्ही मँहगी के घोंर दिस चली देलकै।

हुनी मँहगी-घरों सें अभी दू गज दूरे होतै कि मँहगी ऐगन्है सें हुनकों खड़ाऊँ के चटचट आवाज सुनलकै आरो तेतरी-माय दिस होतें

बोललै, ‘‘आरो जाय लें रोकों, दादा आपने आवी गेलै’’ आरो ई कहतें सीधे दुआरी दिस झपटी पड़लै।

मँहगी के बाहर निकलना छेलै कि तेतरी-माँय झट सना ऐंगना में खटोली पारी देलकै आरो नीचे में ताड़ों पत्ता के एक ठो चटैयो।

‘‘काका खकसतें-खकसतें ऐंगनों ऐलों छेलै आरो खटोली कें अपनों दिस खींची बैठतें हुएँ बोललों छेलै, ‘‘मँहगी तोरा तेतरी-मायं हमरा कन जाय लें मना करलकौ, ते तोहूँ मानी लेलैं ताकि हमरों दस-पाँच ठो लीची-आम बची जाय। यही नी ? आरो है नै सोचलैं कि तेतरी, पंचु, बंटु हमरों लुग आवै छै, तें ओकरा सिनी सें गप-सप करी कें हम्में तीन लोकों के सुख पावी लै छियै। ऊ सुख के सामना तें हमरों लें तीन देवता के वरदानो फीका छै। कहाँ छै ऊ सब ? आय हमरो यहीं घंटा भरी के, समय बिततै, यहा बुझें। अरे बच्चा-बुतरू कें दू-चार टा फोंल दै दै छियै, तें कोन चौखंडी दै दै छियै! आबें भूलों सें हेनों नै करियैं।’’ फेनु झोली मँहगी के हाथों में थमैतें बोललै ‘‘कहाँ छै मैना-सुग्गा सिनी ?’’

तें, मँहगी एक दिस इशारा करी देलकै। काकां देखलकै, तीनो एक चटाय पर बैठलों कुछु-कुछु कही-सुनाय रहलों छै। हुनी खटिया उठैलकै आरो वहीं पर बिछाय कें बैठी रहलै। काका के देखना छेलै कि तीनो खुशी सें गनगनाय उठलै–‘‘काका ऐलै, काका ऐलै’’ कही-कही कें।

‘‘की गपशप होय रहलों छेलै?’’ काकों खुश होतें पुछलकै।

‘‘काका, पंचु कही रहलों छेलै कि पूरा अरण्य पुरैनियाँ केना कें बनी जैतै। एतें कहीं नाम बदलै छै, तें हम्मे कहैलियै, ई केना नै हुएँ पारें गॉमों के पुरहैत काका के बेटा के नाम दृढ़व्रत छेकै, ते गाँववाला ओकरा डेडबितना केना कहै छै।’’

‘‘एकदम ठीक बोली रहलों छैं।’’ काको ठठाय कें हँसतें आरो तेतरी के माथा सहलैतें बोललै।

‘‘एह, हम्में कहाँ कहलियै कि हेनों नै हुएँ पारें।’’ पंचु बंटु दिस देखतें बोललै।

‘‘हमरों दिस देखी कें की बोलीं रहलों छैं। हम्में थोड़े बोललों

छियै।'' बंटु ने आँख बड़ो करतें कहलें छेलै।

''अरे, तोरा सिनी कबूतर-कौआ नाँखी कैहिने लड़ें लगले। कलकों कथा के आगू सुनना छौ की नै ?'' काकां हाथ डोलाय-डोलाय कें कहलें छेलै, तें सब एक्के सार्थे चिल्लैलै, 'हों।' आरो सब पालथी मारी चटाय पर चुपचाप बैठी रहलै।

''मँहगी, तहूँ यहाँ खटिये पर आवी जो!'' काकां दायां हार्थो सें खटिया के पासी कें दू दाफी थपथपैतें कहलें छेलै।

''नै दादा, हम्में मचिया लै आनै छियै। तोरो जातरा-कथा तें हेने बुझावै छै; जेना हम्मी जातरा करलें रहौं।'' कहतें-कहतें ऊ वहाँ सें निकली जल्दिये मचिया लेलें आवीं गेलों छेलै। बस ओकरों बैठे भर के देर छेलै कि काकां कहना शुरू करलकै, ''तें मुजफ्फरपुर सें निकली कें हम्में सीधे गोरखपुर पहुँची गेलियै, यानी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर। जानै छैं, मुजफ्फरपुर सें कत्तें दूर छै, गोरखपुर ? एकासी कोस दूर । जों एक कोस में दू मील मानी लें, तें कत्तें मील होलै?

अभी उत्तर दै लें पंचु सुरफुरैये रहलों छेलै कि तेतरी टनकी पड़लों छेलै, ''एक सौ बौसठ मील।''

''एकदम ठीक। आखिर प्रशांत गुरुजीं पढ़ाय छौ नी, जानभैं केना नै।'' काकां चुटकी बजैतें कहलकै, ''आरो की तोहें जानै छैं कि लगभग सोलह सौ मीटर के एक मील होय छै। मीटर माने कपड़ा नाँपैवाला। आरो जों हाथी एक घंटा मे पनरों-सोलो मील चलै छै, तें कै कोस चललै बंटु?'' काकां बंटु सें पुछलकै—जेकरों ध्यान तें काकाहै पर छेलै, मतर दोनो हार्थो सें गोड़ों के अंगुरी पुटकावै में लगलों छेलै। काका के सवाल सुनथैं दोनो हार्थो कें गोदी में रखी उत्तर जानै लेली मुड़ी ऊपर करी लेलकै। तेतरी ताकों में छेवे करलै, से झट सें बोललै ''सात-आठ कोस ।''

''एकदम ठीक।'' काकाहो तुरत बोली पड़लै, ''आरो, गर्मी दिनों में संझकिये बेरा चलें पारें। भोरे सात-आठ के बाद तें खाली आरामे में दिन कटै छै। खाली झुपनियैतै रहै छै। आबें एक घंटा में हाथी जों साते कोस चललै आरो ऊ रात भरी तें नहिये नी चलतै। बेसी-सें-बेसी चार-पाँच घंटा। तें मुजफ्फरपुर सें गोरखपुर आवै में होन्हौ कें तीन दिन तें लगिये गेलों छेलै। रात भरी हाथी पर रुकी-रुकी कें तीन दिन तांय

चलतें रहलियै।'' फेनु जल्दिये बंटू दिस घुमतें ओकरा सें पुछले छेलै, ''अभी जे तोहें गोड़ के लों गिनी रहलों छेलैं। की तोहें बतावे पारैं कि हाथी के चार गोड़ में कत्ते लों होय छै?''

''बीस।''

''नै।''

''सोलह ।''

''नै।''

''तबें कत्तें होय छै?'' तेतरीं पुछलें छेलै।

''जानी लें, हाथी के अगुलका दोनो गोड़ों में पाँच-पाँच आरो पिछुलका दोनो गोड़ों में चारे-चार लों होय छै। खैर हमरासिनी चौथों दिन गोरखपुर पहुँची गेलां।''

''वहीं, जहाँ गोरखनाथ जी के मन्दिर छै? तबें तें मंदिर देखलें होवो। बाबां ऊ मंदिर के बारे में हमरासिनी कें बतैलें छेलै।'' पंचु बोललै।

''इच्छा तें हमरो खूब छेलै मतर गोरखपुर पहुँचवे करलियै भोरे सात बजे। हाथी आबें आगु बढै लें तैयारे नै छेलै। बस एक्के रस्ता बची गेलों छेलै कि ओकरा लैकें हम्में रोहिणी नद्दी पहुंची जाँव।''

''ई की गंगे नद्दी नाँखी कोय नदी छेकै?'' बंटु पुछलें छेलै, ''की चानन नद्दी नाँखी यहू पहाड़े सें निकलै छै?'' बंटु पुछलें छेलै ।

''ठिक्के कहलैं। रोहिन नद्दीयो नेपाल के शिवालिक पर्वत सें निकलै छै आरो गोरखपुर के घाघरा नद्दी में मिली जाय छै। खैर, डुबकी कें लैकें हमरासिनी रोहिणी नगीच ऐलियै, तें डुबकी सीधे नद्दी में ढुकी गेलै आरो सूँड़ों में पानी भरी-भरी कें अपनों ऊपर ढारें लगलै। हम्में तें बची गेलियै मतर महावत काका भीजी कें सरगद।''

''हेनों कैन्हें करलकै, हाथीं?'' पूछै वक्ती तेतरी के आँख फैली गेलों छेलै ।

''बतैलें छेलियौ नी, हाथी गरमी नै बर्दास्त करें पारै छै, यै वास्तें पानी आकि नद्दी सें हाथी कें बड्डी लगाव रहै छै। रातो नद्दी आकि झील में सुस्तैतें रहलों। ई तें दिने छेलै—वहू में गर्मी के दिन।''

''हाथी कें एत्तें गर्मी कैन्हें लगै छै, काका?'' तेतरी के प्रश्न

करत्हैं पंचु फेनु कुनमुनैलो छेलै आरो बोललै, ''बेसी जानना छौ, तें हाथी सें जाय कें पूछी ले।''

''अरे पंचु, कत्तें सुन्दर बात तें करी रहलों छै, यैं। जानै लायक बात छै। अच्छा पंचु गर्मी दिनो में तोहें कै दाफी नहाय छैं?''

''केन्हौ कें एक दाफी, वहू बाबू के डरों सें। ठंडा दिनों में तें माय के मारलौ पर नै नहाय छै। देह-हाथ गन्हाय छै; बोतू हेनों।''

ई बातों पर पंचु जरुरे तेतरी पर धौल जमाय देतियै, बड़ी होलै तें की। मतर कनौजिया काका आरो बाबू के डॉर ओकरा हेनों करै सें रोकी देलें छेलै। तेतरीयो एत्तें बोली गेलै, तें बाबू आरो काकाहै के बल्लों पर।

''तें, तोहें पुछलैं कि हाथी कें एत्तें गर्मी कैन्हें लगै छै? है तें तोरा बाद में बतैबौ। पहिलें रोहिन नद्दी के बात जानी ले। जबें डुबकी नद्दी मे डुबकी दै रहलों छेलै—तखनी हम्में तैरी कें नद्दी काता आवीं गेलियै आरो नद्दी कें गोड़ें लगलियै। आबें पूछें कैन्हें, कैन्हेंकि यही नद्दी के किनारा पर आवी कें भगवान बुद्ध अपनों राजपाटवाला पोशाक उतारी कें साधू-संन्यासी बनी गेलों छेलै।''

''सहियें काका?''

''हों, लोगें तें यहा कहै छै। यही सें हम्में ऊ नद्दी कें गोड़ें लगलियै।''

''तबें तें ऊ नद्दी कभियो नै सुखतें होतै?'' तेतरी बोललै ।

''भगवान करें कभियो नै सुखें। काका बोललों छेलै आरो तुरत्ते तेतरी के पहिलों प्रश्न के उत्तर दियें लगलै, ''तोहें पुछलैं कि हाथी कें एत्तें गर्मी कैन्हें लगै छै; ते जानी ले—हाथी बेसी-सें-बेसी एक कोस एक दाफी में चलें पारें। बेसी चलला पर की होय छै कि ओकरों देहों में दरार पड़ें लगै छै। भारी देह होला के कारण ओकरों देहों के गर्मी बढ़ें लगै छै। वही गर्मी कें शीतल करै वास्ते या तें अपनों सूँढों सें देहों पर पानी उझलतें रहै छै आकि नद्दी-पोखर देखलकों, तें वही में घुसी कें खाड़ों होय गेलै।''

''ओ। आबे बुझलियै। तबें तें ऊ नद्दिये में सँझकी तांय खाड़ों रही गेलों होतै ?'' पंचु के पुछला पर काका कहलकै, ''ओकरों बाद की

होलै नै कहें पारौं । हम्में बग्घी पकड़लियै आरो एक झपट गोरखबाबा के मंदिर देखी ऐलियै। बेरा झुकै पर छेलै, जखनी लौटलियै। डुबकी जना हमरे प्रतीक्षा में रहें। हमरा देखथैं अपनों सूँढ़ हमरों दिस बिछाय देलकै आरो हम्में सूँड़े के सहारा हौद में जाय बैठलां। अबकी सोची लेलें छेलियै—डुबकी भले जहाँ-जहाँ रुकें, हमरा रुकी के कहूँ नै जाना छै। कोय मंदिर-मूरत के दर्शन नै करना छै। बस सीधे अमृतसर।''

कि तखनिये डुबकी के शंखवाला आवाज जोर सें गुंजलों छेलै।

''अरे हेनों की होय गेलै। डुबकी कैन्हें बुलाय रहलों छै। आगू में चार दर्जन केला, सेर भरी गहुम आरो ढेरकों घास-पात तें रखिये देलें छेलियै।'' काकां अपने आप में बुदबुदैलै।

''सुनै छियै काका कि हाथी केतारी खेतों में घुसी कें केतारियो खाय जाय छै।''

''मत पूछें, तेतरी बेटी, केतारी तें ओकरों एकदम सें प्रिय भोजन छेकै, जेना कि महुआ के दारू। अरे, महुआ के रसे पीयै लें नी नद्दी पारों में वनवासी सिनी के बस्ती मे कभी काल घुसी जाय छै आरो घरों में घुसी कें सब टा महुआ-रस पीवी के झुमलों-झामलों जंगल दिस चल्लों जाय छै। वहू एक-दू नै, पाँच-छौं हाथी।''

''बाप रे, बाप।'' कहतें-कहतें तेतरी के देह एकदम सें भोआय गेलों छेलै। कि तखनिये दुबकी के चिग्घाड़ फेनु गुंजलों छेलै।

''आबे हम्में रुकें नै पारौं। हुएँ-नें-हुएँ प्यास लगी गेलों रहें।'' एतना कहतें काका उठलै आरो एकेक करी कें तेतरी, पंचु, बंटु के माथा पर हाथ रखी-रखी के कहलें छेलै, ''कल मुँ-हाथ धोय कें भोरे-भोर हमरा कन पहुँची जाना छै।'' फेनु मंहगी के देखतें कहलकै, ''कल नागा नै होना चाही; जेना आय होय गेलै। सात बजे तांय डुबकी कें नहाय-धोलाय, खिलाय-पिलाय कें तैयार करी देवै। कल सें असली कहानी शुरू होतै। की सुग्गा, मैना, कबूतर, सुनना छै की नै?''

''हों काका।'' सब एक्के साथ बोली पड़लों छेलै।

॥ पाँच ॥

जखनी मँहगी अपनों तीनों बच्चा के साथ कनौजिया काका के बखारी पर पहुँचलों छेलै, तखनी काका एक आमों गाछी के नीचें अपनों मुंहों पर हथेली के तुतरू रखी 'कुहू-कुहू' करी रहलों छेलै आरो हुन्नें सें कोयल रों आवाजो आवी रहलों छेलै, ''कुहू-कुहू।''

''की करी रहलों छौ लाल दा! कोयल कें आवाज दै छौ?''

''अरे असली कोयल, मैना, बगरो ते ई सनी छेकै, जे तोरों साथ ऐलों छौ। मोंन नै लगै छै, मँहगी, तें यहा रं कोयल-मैना सें बात करतें रहै छियै। मोंन बहली जाय छै।'' कि तभिये हुनकों नजर तेतरी पर पड़लै, तें पुछलकै, ''अरे तोहें हथेली में मुँह छिपलें हँसी कैन्हें रहलों छैं?''

कि तखनिये पंचु बोली पड़लै, ''हम्में नै, बंटु बोललों छेलै''

आरो बंटु बार-बार इनकार में हाथ डोलैतें बोली रहलों छेलै, ''नै, हम्में नै, पंचुवे बोललों छेलै।''

''अरे कोइयो बोललों रहें, पहिले ई ते बताव, की बोललों छेलै।'' कनौजिया काकां अकबकैतें होलें पुछलकै ।

''हम्मे कहियौं लाल दा, आवी रहलों छेलियै, तें बंटु पीछू से बोललों आवी रहलों छेलै, आमों के लकड़ी कड़ा-कड़ी....।'' एतना कही तेतरी मुँहो पर फेनु हाथ रखी के हँसें लगलों छेलै, तें काका बोली उठलै, ''एकरा मे नै-नै करै के की बात छै। हम्मे बोली दै छियौ।'' एतना कहना छेलै, कि तेतरी मुँहो पर रखलों हथेली कें एतन्है उठाय लेलकै कि नाको झपाय जाय।

''एह, जना लगै छै, बोलले भर सें सब गन्हाय जैतै—तें चलें, नै बोलवै। अच्छा ई ते बताव—तोरा तीनो में कोय, हाथी पर आरो कोय दोसरो कविता जानै छैं, ई पिहानी छोड़ी कें ?

''हम्में जानै छियै नी, काका।'' तेतरीं मुँहों पर सें हाथ हटैते कहलकै।

''अच्छा, सुनाव तें।''

आरो तेतरी दोनो हाथ हिलाय-हिलाय कें गावें लगलैः

टुकढुम-टुकढुम हाथी राम

तोरों सवारी बिना लगाम
सूँढ़ लटकलो अजगर रं
चमड़ो तोरों पत्थर रं
दाँत दुधे-रं चमचम-चम
खाना मोंन भरी नै कम
पर टुकनी रं आँखे जाम
टुकढुम-टुकढुम हाथी राम।

पेट छेकौं कि छेकौं पहाड़
गोड़ छेकौं या गाछे ताड़
लगौं डमोलों दोनो कान
तोरो मालिक बस पिलवान
सब बुतरू के तोरा सलाम
टुकढुम-टुकढुम हाथी राम।

कविता खत्म होथैं काका एकदम बच्चे नाँखीं थपड़ी बजाय-बजाय कें गोल-गोल घूमें लगलै। ई देखी के तेतरीयो उछली-उछली कें थपड़ी बजावें लगलै।

काका रुकलै, तें तेतरी के दोनो हथेली अपनों हाथो में लेलें बोललै, ''तोहें तें हाथी के इतिहास-भूगोल एक्के छोटों-रं कविता में बताय देलैं। आबे कुछुए कहै के पहिले तोरों कविताहै पर बातचीत होय जाय। तहूँ गौर सें सुनियें मँहगी। है ते ठिक्के बात छेकै कि हाथी के चाल टुकढुम-टुकढुमवाला होय छै मतुर जरूरत पड़ला पर हाथी पचासो किलोमीटर के रफ्तार से दौड़ें पारें। की बुझलैं! आरो तोहें की बोललैं—सूँढ़ लटकलों अजगर-रं। एकदम ठीक बोललैं। मतर अजगर बोझों नै उठावें पारें आरो हाथी के सूँढ़ ! जानै छैं साढे तीन सौ किलो ग्राम सें बेसीये वजनी वाला सामान उठावें पारें। आरो देखवैं'' ई कही कें काकां जेबी सें एकठो अठन्नी निकाली लेलकै आरो हाथी के आगू फेकी देलकै। हाथी आगू बढ़लै आरो सूँढ़ो सें अठन्नी उठाय कें काका कें दै देलकै। तखनी काका डुबकी के नगीच पहुँची गेलों छेलै ।

चौवन्नी लैकें लौटलै, तें बोललै, ''देखलैं, खाली भारिये चीज नै

अठन्नीयो उठावें पारें। हाथी के सूँढ़ एकरों हाथों के काम करै छै। है केला, घास, पत्ता, टहनी आखिर सूँढ़े सें तें उठाय के मुँहों में डालै छै। तोहें नै देखलें छैं, हम्मे देखलें छियै कि केना हाथी गाछ के ठार सूँढ़ो सें झुकाय कें अपनों बच्चा कें खिलावै छै। देखलैं अजगर-रं काला सूँड़ कत्तें काम के होय छै। यही सूँढ़ो सें हाथी गैलेन-गैलेन पानी पीवी जाय छै। गैलेन बुझै छैं, तेतरी ?''

तेतरी नै कहै लें मूड़ी हिलैलें छेलै, ते काका बोललै, ''एक गैलेन मतलब लगभग चार लीटर; पच्चीस गैलेन के मतलब होलै कि दिन भरी मे सौ लीटर पानी पीवी जाय छै।''

''बाप रे, बाप! हमरा सिनी के तें दिन भरी मे सेर भरी पानी पीतें दम फूलें लगै छै। बंटु तें आरो सुंडा।'' तेतरी बोललै, तें काकां कहलकै, ''अच्छा, ढेंसा-ढेंसी के कोय जरूरत नै छै। जानै के बात छै। हाथी अपनों सूँढों सें चार सें पाँच किलो मीटर दूरे सें पानी के गंध लै लै छै। तेतरी तोहें कहलैं नी—चमडी तोरों पत्थर-रं.... ठीक बोललैं—एक इंच सें कम मोटों नै होय छै एकरों चमड़ी। मतर कनपट्टी के चमड़ी मुलायम होय छै। महावत यही कनपट्टी के चमड़ी कें गोड़ोवाला अंगुरी सें ओकरा चलै के इशारा करै छै, आरो एक बात, भले हाथी के चमडी मोटों आरो पत्थर रं लगें—सूरज के रौद एकरा बड़ी तिक्खों लगै छै, मतर यहीं से ई अपनों ऊपर पानिये नै, धुरदो डालतें रहे छै कि रौद के दुष्प्रभाव नै पड़ें। बुझलैं, हाथी कैन्हें अपनों माथा पर धुरदा डालै छै। ...आरो तोहें की बोललैं—खाना मोंन भरी, नै कम .... एकदम ठीक बोललैं बलुक कभियो-कभियो तें बेसिये। आरो देखें तोहें की सुन्दर कविता पढ़लैं—लगौं डमोलों तोरों कान। डमोले-रं हाथी के कान झुलतें रहै छै। जानै छैं कैहिनें? अच्छा बताव तें डमोलों सें गर्मी दिनो में की बने छै?''

''ताड़ों के पंखा।'' सब्भे बच्चा एक्के साथ बोललै।

''पंखा के की काम छेकै?''

''गर्मी दूर करवों।'' एक्के साथ सब जोरों सें बोललों छेलै ।

''एकदम ठीक। तें जानी ले, हाथी के कान हाथी लें पंखा छेकै। है तें कहवे करलियौ कि हाथी कें मोटों चमड़ी आरो भारी शरीर के कारण बड़ी गर्मी लगै छै। तें, हाथी जे लगातारे कान डुलैतें रहै छै, अपनों गर्मिये

दूर करै लें। ...तेतरी, आरो आँखी वास्ते तोहें की बोललैं, जरा फेनु से बोलैं तें !''

''पर टुकनी-रं आँखे जाम।'' तेतरी झट-सना बोललै ।

''हों, टुकनीये-रं तें हाथी के आँख होय छै। यही सें दिनहौ में कम सूझै छै। गर्मी दिन मे तें आरो कम। आरो ऊ देखैं, हाथी के आँखी में कत्तें लोर छै।'' काकां दुबकी के आँख दिखैतें बोललै ।

''हों काका, हाथी तें कानी रहलों छै।''

''कानै नै छै तेतरी; है जे टुकनी-रं हाथी के आँख होय छै—एकरों डिम्मी सिनी जल्दीये सुखें लगै छै। ऊ सूखें नै, तहीं सें आँखी सें पानी निकलतें रहै छै। देखै छै नी, ऊ पानी आँखी सें बाहर तांय आवीं गेलों छै। लगै छै, खूब भीतर-भीतर कानतें रहें।''

''बाप रे बाप; काका, तोहें हाथी के बारे में कत्तें बात जानै छौ!'' तेतरी के आँख आचरज सें बड़ों होय गोलों छेलै।

''तोरा सें बेसी कहाँ। सब बात तें तोरे कविता में छौ। की कहलैं—दाँत दुधे-रं चम, चम, चम। जानै छैं तेतरी, यही दाँत सें हाथी गाछ के खाल छीली कें ओकरो पानी पीवी जाय छै आरो पहाड़-रं एकरों देहे नै, पहाड़े-रं ताकतो छै। गेंडा तें एकरों डरों सें सुटियैले रहै छै। जों यें अपनों दाँत सें ओकरा पर हमला करी दै तें ओकरों देह के खोलिया तक उतरी जावें पारें। हों। हाथी के दाँत हाथी लें हथियारो होय छै, जानी ले। ई दाँतों सें जरूरत के समय मट्टी खोदी कें पीयै लें पानी निकाली लै छै।''

''काका, सच्चे में एत्तें कोय नै जानतें होतै, जत्तें तोहें जानै छौ।''

''तहूँ ते कत्तें बात जानै छैं, तेतरी । तोरों कविताहै सें हमरा पता चली गेलै। बुतरू सिनी हाथी कें की सलाम करतै; तोरो बुद्धि पर तें हाथिये अभी तोरा सलाम करतौ; देखियै। आरो काका डुबकी दिस होय कें कुछ इशारा करलकै, कि ऊ जरा-सा दोनो अगुलका गोड़ उठैतें सूँढ़ कें साँप के फन नाँखी ऊपर उठैले छेलै आरो जोर के शंख नाँखी आवाज करतें सूँढ़-गोड़ नीचें करी लेलें छेलै। ई देखथैं तेतरी, पंचु, बंटु, ताली पिटतें उछलें लगलों छेलै।

“आबें बोल, तोरों वास्ते दुकानी सें की लानी दियौ।” काकां खुश होतें कहलकै ।

“कुछ नै, काका। कलकों आम-लीची तें घरों में धरले छै। तोहें जल्दी सें ई बताय दौ कि ई हाथी ऊ रोहिन नद्दी सें जल्दी निकललों कि साँझ तांय नद्दीये में ढुकले रही गेलौं।

“हेनों तें नहिंये होलों होतै कि डुबकी नद्दिये में डुबकी देतें रही गेलों होतै। बेसी-सें-बेसी घंटा भरी रहलों होतै। फेनु बुद्ध के जीवन सें जुड़लों नदी आरो हाथी! हम्में कथी लें महावत काका कें कुछ कहतियै कि दुबकी के बाहर करों।”

“बात नै बुझलियौं, लाल दा!” मँहगीं पुछलकै ।

“हों मँगन, बुद्ध के जीवन सें यहू कथा जुड़लो छै कि हुनकों जन्म के पहलें एक रात हुनकी माय माया देवी नें हेनों सपना देखलकै कि एकठो दिव्य उजरों हाथी हुनका सें कही रहलों छै—हम्में तोरों कोखी में लोककल्याण वास्तें प्रवेश करी रहलों छियौं। हेनों मानलों जाय छै कि वहा उजरों हाथी बुद्ध बनी कें लोककल्याण लेली अवतार लेलकै।”

“लाल दा, ई कथा कौनी किताबों में मिलै छै?”

“अश्वघोष के संस्कृत में लिखलों महाकाव्य में ई कथा आवै छै, जे आय सें समझें कि बीस सौ साल पहिलें लिखलों गेलै; फेनु दू-तीन साल के बाद चीनी आरो तिब्बती भाषा में अनुदित होलै । आबें तें ठिकाना सें कोइयो किताब नै मिलै छै।”

“ओ।”

“काका, की हाथी उजरो होय छै?” तेतरी तुरत बोललै जे यहा इंतजारी मे छेलै कि बाबू चुप हुएँ आरो वैं ई बात पूछें।

“होय छै नी, बेटा। एकदम होय छै आरो उजरों हाथी के जन्मकथाओ अपने अंग प्रदेश से जुड़लों छै। एक नै, दू-दू कथा। सुनै लें चाहवैं।”

“एकदम काका।” तेतरीये नै, बंटु सार्थे पंचुओ बोललों छेलै।

“आरो हौ जातरावाला कथा?” काका पूछलकैं ।

“ऊ एकरों बाद सुनवै। पहिलें उजरों हाथी के कथा कहों!”

“तें सब पालथी मारी कें बैठी जा। कथा तें बहुत लंबा छै मतर

छोटे करी कें सुनाय छियौ। एक दाफी सुर-असुर मानी देवता आरो असुर-असुर माने जे देवता नै रहें, कहै के मतलब आदमी। तें देवता आरो आदमी दोनो मिली कें समुद्र मथै के बात सोचलकै, तें घोटनी केकरा बनेलकै जानै छों; अपने मनार पर्वत कें। समुद्र के घोटना शुरू करलकै, तें चौदह ठो रतन निकललै; वही चौदह रत्नों में उजरों हाथियो छेलै जेकरों नाम ऐरावत छेलै, जे देवता के राजा इन्द्रें अपनों लुग रखी लेलकै।''

''केन्हों होतै ऊ हाथी?'' तेतरी कें आँख बड़ों होय गेलै ।

''अजीब-अजीब कथा छै ऊ, ऐरावत हाथी के बारे में । कोय कहै छै, ऐरावत के चार दाँत छेलै, तें कोय कहै छै—दस दाँत छेलै। हेनों जे भी कहै छै, तें ओकरों पीछू यही बात होतै कि ऐरावत चारो दिशा के रक्षक छेकै। जे दस दिशा मानै छै, ओकरों मोताबिक, ऐरावत दसो दिशा के रक्षक छेकै।''

दस दिशा के बात सुनैलकै, तें तेतरी टनकी पड़लै, ''काकाऽऽऽ, दिशा तें चारे होय छै, हम्में कविता घोकी कें जानलें छियै :

उत्तर में उतराहा सब
दक्खिन में दखनाहा सब
सूरज उगतै पूरब दिस
कत्तो तोहें करवे इस
डुबतै तें बस पच्छिम में
कत्तो तोहें करवे इस ।''

कविता सुनी कें कनौजिया काका हँसतें-हँसतें बोललैं तें तोहें एकदम ठीक, मतुर ई चारो दिशा के चार कोण, चार दिशा कहावै छै, जेकरों नाम होय छै, तें आठ होय गेलै आरो फेनु ऊपर-नीचें । होलै नी दस ?''

''सहियै तें, आबें बात कें बदलतें । आरो दोसरों कथा की छेकै?'' ई बातों में रस नै पावी के तेतरी बीचे में कहलें छेलै जे बातों के समझथैं काकौं कहलें छेलै, वहू सुनाय छियौं...अपनों यहा अंग प्रदेश में हर्यंक नामक एकटा बड़ा प्रतापी गजा होलै, जौनें एक बड़ा भारी जग्ग करलकै, जेकरों पुरहैत छेलै रिखि शृंगी के पिता विभांडक मुनि। जबें जग्ग

समाप्त होलै, ते इंद्र के प्रसन्न होला के कारण जग्गों से अश्वत्थामा नाम के एक दोसरों ऐरावत हाथी निकललै।''

''हेनों की हुएँ पारें, काका?'' तेतरी के उत्सुकता रुकें नै पारलै। ''एकरा हेनो कें समझलों जावें पारें कि जग्ग समाप्ति पर खुश होय कें इन्द्रें दोसरों एरावत हरयंक राजा कें भेंट करलकै।''

''तें, वहू की समुद्रे सें निकललों छेलै?''

''अरे, अपनों अंग प्रदेश मे हेनों-हेनों हाथी के कमी छेलै की! जबें बडों होभे नी, तेतरी, ते महाकवि कालिदास के किताब रघुवंशम् आरो महाकवि चंद बरदाई के किताब पृथ्वीराज रासो पढियें, तबें तोरा पता लगथौं कि अपनों यहाँ केन्हों-केन्हों विशाल हाथी होय छेलै आरो सब-के-सब सिखैलों-पढ़ैलों। हाथी के रोग दूर करै वासतें तबें हौ जुगों में एक रिशियो छेलै, जिनकों नाम पालकाप्य छेलै। आरो है के कहें पारें कि बहुत पुरानों समय में हाथी के चार दाँत नहिये होतै। कहै छै–आदमी के नेंगडियो होय छेलै।''

''की बोलै छौ, काका!'' तेतरी बोललै, तें पंचु, बंटुओ खिलखिलाय कें हँसी पड़लै।

''अरे झूठ थोड़े बोलै छियौं। बडका-बड़का विद्वानें खोजी कें बतैलें छै। आबें जों तोरा सें कहियौं कि हाथी कभियो सूअरे एत्तें उच्चों होय छेलै, तें मानभैं। नै नी मानभैं। मतुर है सच छेकै। हवा-पानी बदल्लों गेलै आरो सूअर के आकारवाला हाथी बढ़ी कें ई आकार में आवी गेलै। हवा-पानी के असर ते पड़वे नी करै छै, तेतरी । अपनों देश के जेहनों हाथी देखाय पड़ै छां; दोसरों देश के हाथी आरो बडों होय छै। आगू चली कें जानभैं; अफरीका हेनों महादेश के बारे में। वहाँकरों हाथी अपनों देश के हाथी सें बेसी बड़ों आरो बरियों होय छै। दुक्खी के कानों सें डेड़ गुना बड़ों आरो दाँतो एकरा से डेढ़ गुना बड़ों। हाथी पाँच हजार सें सात हजार सेर के हुएँ पारें। जखनी हाथी जनमै छै, तखनिये ते एकरों वजन दू मोंन सें बेसीये होय छै ।''

''बाप रे, बाप! केन्हों विशाल लगतें होतै।'' पंचु अपनों दोनो हाथ ऊपर करतें बोललों छेलै।

''एकरा में की शक! बरियों तें एत्तें हुवै छै कि बड़का-बड़का

भैसा कें सूँढ़ों सें उठाय कें पटकी दें।'' काकां मूड़ी कें ऊपर उठाय हेना नीचें करलें छेलै, जेना केकरो माथा पर लै नीचें पटकतें रहें ।

''बाबू हो, बाबू।'' कही कें तेतरी दोनो हाथ जोड़ी कें गल्ला सें सटैते कहलें छेलै, ''काका आबें डरावैवाला कहानी छोड़ी कें बढियाँ कहानी सुनावों। है सुनावों कि गोरखपुर में फेनु की करलौ!''

''फेनु की करलियै। डुबकी कें नद्दिये में छोड़ी कें, महावत काका हेली कें किनारी आवी गेलै आरो हम्में काका के कानों में कुछ बोली कें वहाँ सें निकली गेलियै। कहाँ गेलियै ? की करलियौ ? है सिनी बात आबें कलकों लेली। हों, आय तोरों सिनी लें कुछु खास मँगवैलें छियौं। घरों में जाय कें खैइयें आरो माय सें पुछियैं—ई सब कहाँकरों बनलों छेकै।'' ई कही कनौजिया काकां घरो सें एकटा छोटो-रं झोली लै आनलें छेलै आरो मँहगी कें थमैतें कहलें छेलै, ''कल आरो सबेर लै आनियैं, ई सब के। आठ, नो रोजो के बाद इस्कूल खुली जैतै, तें नहियें नी आवें पारतै। हम्में आमो के टहनी तोड़ै लें चललियौ। डुबकी कें खिलाय के बेरा होय चललै।''

आबें बुतरूओ सिनी के ध्यान पोटरी आरो बाबुए पर छेलै कि कत्तें जल्दी बाबू वहाँ सें उठें।

॥ छों ॥

''देखें, तोरों काका की करवो करी रहलों छौ!'' तेतरी दिस मुँह करतें हुएँ मँहगी बोललै, ''बोंर गाछी के तिरफेकन देवो करी रहलो छौ।'' फेनु दस हाथ दूरे सें कहलकै, ''बहुत दिनों के बाद ई भजन गैतें देखी रहलों छियौं, लाल दा।''

''ओह, तोरा सिनी आवी गेलै'' काकां मंहगी दिस घुमतें कहलें छेलै, ''आरो ऊ तीनो?''

''ऊ तीनो तोरे पीछू खाड़ों होय कें तोरै देखी रहलो छौं कि गाछी

पर की फेकी रहलों छौ!''

काकां घुमी कें देखलें छेलै आरो खुश होतें हाथों के बचलों सब चौर कें गाछी के खोड़र में फेंकतें कहलें छेलै, ''खोड़र में सुग्गा सिनी के बच्चा भुखलों नै रही जाय, यही सें चौर गाछी के खोड़र सिनी में फेकी रहलों छेलियै ।''

''की खोड़र में सुग्गा के बच्चा छै? हम्में देखवै काका।''

''देखवैं, ते देखियैं हम्में औंकरी फेकवै आरो ऊ सिनी लाल-लाल लोल बाहर निकालतौ।'' तेतरी कें मचलतें देखी कें काकां वही करलकै आरो हुन्नें सें आवाज करतें सुग्गा के बच्चा सिनी लोल बाहर करलें छेलै। तें, एक्के साथ तेतरी, पंचु, बंटु के चेहरा पर हँसी खिली गेलों छेलै।

''देखलैं नी तोरासिनी। सँझकी जखनी सुग्गा के भुण्ड गाछी सिनी पर जुटै छै नी, तखिनकों की कहियौ। है देखै छौं—सुग्गा सिनी वास्ते जग्घा-जग्घा पर औंकरी रखी देले छियै आरो मिरचौयो। मिरचाय तें आरो मनो से खाय छै, सुग्गा।''

''सुग्गा कें झाल नै लगै छै, काका ?'' पुछतें तेतरी के आँख फैली गेलै ।

''नै । ओकरों जीहा में झाल लगैवाला तंतुवे नै होय छै ।''

''सुग्गा के झुंड हम्मू देखवै, काका।''

''तें कलकों चौपाल यहीं ठां लगतै आरो भोरे नै सँझकी। ठीक छै।'' तेतरी के माथा पर हाथ रखतें काका कहलकै ।

काका के बातो के समर्थन में पंचु आरो बंटु बायां दिस मूड़ी झुकैले छेलै, ते तेतरी बोली उठलो छेलै, ''नै काका, पहिले कहानी हमरा सिनी पहिलकेवाला जग्घा में सुनवै। यैठां ते ध्यान रही-रही सुग्गे पर चल्लो जैतै।''

''ठीक-ठीक। हम्मू मनों में यही सोची रहलों छेलियै'' कहतें काकां सबके पीठी पर बारी-बारी सें हाथ रखतें, सबके साथे बैठकी नगीच आवी गेलै। अभी हुनी अपनों कुर्सी पर बैठवे करतियै कि मँहगी सफेद दगदग कपड़ा सें ढकलों एक बड़ो-रं बाटी हुनकों दिस बढ़ाय देलकै।

''समझी गेलियै, समझी गेलियै; तेतरी-मांय हमरा लेली की

भेजलें छै। गोजिया होतै! बाप-रे-बाप, कै साल बीती गेलै तेतरी-माय के हाथों के बनैलों गोजिया खैलें। जब तांय पंडायन रहलै, तोरो घरों के गोजिया हफ्ता, दू हफ्ता में आविये जाय छेलै। खैर आबें ऊ सब बात याद की करना।'' कहतें हुएँ काकां बाटी अपनों हाथो में लै लेलकै आरो घरों में रखी जल्दीये लौटी ऐलै।

''तें, तोरासिनी कें आय गोरखपुर के बाद के कहानी सुनना छौं।'' काकां एकदम प्रसन्न चित्तों सें कहलकै।

''हों।'' तीनो के मुंहों सें एक्के साथ निकललों छेलै।

''तें ठीक छै; सुनें! हम्में तें जानवे करै छेलियै कि डुबकी सँझकी सात-आठ के पहिलें गोड़ नै हिलैतै। महावत काकाहो हेनों नै करै लें चाहतै कि बाहर आवै लें कहें। गर्मिये हेनों छेलै आरो हमरा अयोध्या में रामलला मंदिर के परिक्रमा तें करनाहै छेलै, एकदम भोरे-भोर। से मनों में ऐलै पैदले अयोध्या चली दियै—राम जी के नाम लैकें । दौड़े-धूपै पैदल चलै के आदत तें छेवे करलै। मतर भगवान के किरपा देखों कि तखनिये एक बग्घी हमरों नगीच आवी कें रुकी गेलै। हम्में बग्घी सें बचै वास्तें हटिये रहलों छेलियै कि कोचवान के आवाज ऐलै, ''कनौजिया रे, हिन्नें-कन्नें?'' नजर उठाय कें देखलियै, तें बचपन के दोस्त छेलै जोगिया पांड़े । फेनु तें सब्भे बात हम्में बताय देलियै। तें जानै छौ, जोगियां की कहलकै। कहलकै—पहिलका जनम में जरूर कोय पुन्न करलें होवैं जे आय दोस्त के काम ऐवै। चल पहिलें तोरा अजोध्या पहुँचाय आवै छियौ, फेनु आरो कुछ देखलों जैतै। हम्मू नै नै करलियै। बग्घी में बैठै के मजा पहिलों दाफी लै रहलों छेलियै।

''हाथी सें बेसी मजा आवी रहलों छेलौं ?'' तेतरी पुछलें छेलै।

''खूब मजा। जानै छैं केन्हो!'' आरो काकां केहुनी-बाँही देहे सें सटैलें अपनों दोनो हाथ कटि टा आगू बढ़ाय के खूब तेजी से आगू-पीछू करतें गावें लगलै :

टप-टप, टप-टप
दू पहिया के घोड़गाड़ी
दौड़ी पड़लै
बिन्डोवे-रं

पोखरी के पानी पर जेना
मछली तैरै छप-छप, छप-छप
टप-टप, टप-टप।

कनौजिया काकां देखलकै, ओकरों हाथ आरो बोलै के गति देखी कें तेतरियो अपनों दोनो हाथ काँखी सें सटैलें, होने तेज गति से आगू-पीछू करे लगलों छै। ई देखी के काकां अपनों हाथ साथे पढ़े के गति आरो बढ़ाय देलें छेलैः

कभी रौद में
कभी छाँव में
कभी शहर में
कभी गाँव में
मोटर तक कें कुछ नै बुझै
पट्टी तर सें की रं सुझै
चाबुक नाँचै
ऊपरे सप-सप
टप-टप, टप-टप।

आबें तें पंचु आरो बंटुओ के हाथ-जाँघ गति पकड़ें लगलों छेलै। काकां कोन्हराय कें देखलकै, तें एक दाफी बोली साथें हाथ कें आरो तेज करी देलकैः

जंगले-जंगल
कभियो परपट
कच्ची-पक्की सीधे सरपट
बस्ती के बीचों सें होलें
जेहनों कि सड़कों सें सरपट
खैलों-पीलों
सब्भे पचलै
पेटों में बस पानी ढब-ढब
टप-टप, टप-टप।

पेटों में पानी ढब-ढब बोलै के बात सुनी कें खाली तेतरी, पंचु, बटुए नै खिलखिलाय पड़लै बलुक मँहगियो कें हँसी आवी गेलै। काका

मुस्कैतें हुएँ रुकी गेलों छेलै।

"तबें की होलै ?" तेतरी हँसथैं-हँसथैं बोललै।

"तबें की! होना कें गोरखपुर सें अजोध्या आवै में छों-सात घंटा सें बेसी नै लगतियै मतर रुकतें, खैतें-पीतें हम्में तखनी पहुँचला, जखनी बेरा गिरै पर छेलै। दोस्त विदा लेलकै आरो हम्में एक मठ में ठहरी कें भोर के इंतजार करें लगलौं। अभी फरचों होय में समय बाकिये छेलै कि हम्में उठलियै, झोला उठैलियै, जैमें जोड़ा भरी धोती-कुर्त्ता, गंजी छेलै, जेकरा घरों सें लेले चललों छेलियै। नगीच के एक इनारा पर ऐलियै। असनान-ध्यान करलियै आरो पंचकोसी तिरफेकन लें रामलला मंदिर दिस बढ़ी गेलियै।"

"काका, हौ मंदिर की पाँच कोस दूर छै।"

"से बात नै। पंचकोसी तिरफेकन के मतलब होलै मंदिर के पाँच कोसवाला घेरा आरो वही घेरा में घुमना। हमरों बाबुं तें अठारों कोसी परिक्रमा; करलें छेलै। मानी पूरे अवध के परिक्रमा आरो मांय चौदह कोसी परिक्रमा मतलब कि पूरे अयोध्या नगरी। मतर हम्में खाली रामलला मंदिर के करलियै, जे पाँच कोसों के दायरा में पड़ै छै। आखिर दिने-दिन हमरा गाजियाबाद जे निकली जाना छेलै, यही लेली। आखिर वहीं सें दिल्ली आरो फेनु अमृतसर जे निकली जाना छेलै।"

"तें तोहें अपनों डुबकी हाथी आरो महावत काका के इंतजार नै करलौ। आखिर जाना छेलौं तें हाथिये पर चढ़ी कें?" तेतरीं पुछलें छेलै।

"तोरा कहै लें भूली गेलियौ, कि हम्में महावत काका कें बोलाय कें की कहलियै। यहीं कहलियै, कि तोहें दुबकी कें लै कें आबें यहीं सें लौटी जा!"

"से कैन्हें, काका? तोहें तें कहलौ कि हाथिये पर पाकिस्तान-लाहौर जाय के सोची लेलियै ।...की वहाँ सें दोसरों हाथी करी लेलौ ?"

"जों हेनों बोली गेलों होभौ, तें पहिलके सोचलों बात बोलाय गेलों होतै। आबें तोहीं सोचैं, जों हम्में हाथी सें अमृतसर तांय जैतियै, तें बीस-पचीस दिन एकरै में लगी जातियै। फेनु ननकाना साहब तांय हाथी कें लैकें नहिये नी जावें पारतियै-देश बंटी जे गेलों छेलै । हाथी तें हमरा कोय्यो हालतों में अपने देशों में छोड़ै लें लगतियै, ते ओकरा सें

अच्छा यहा छेलै कि ओकरा गोरखपुर में ही छोड़ी दौं। आखिर घरों में माय-बाबू कें तें यही कही कें ऐलों छेलियै—कातिक मास खतम होला के पहिले घोंर लौटी जैवै। एकरों वास्ते जरूरी छेलै कि हाथी के सवारी के बदला कोय दोसरों रस्ता पकड़ौं। की कहिया तेतरी—अभी हम्में सोचिये रहलों छेलियै—की करौं कि तभिये जोगिया बग्घी लेलें फेनु आवी गेलै आरो कहें लगलै, "अरे तोरा सें ई तें पुछवे नै करलियौ कि रामलला-दर्शन के बाद घोंर केना लौटवे। जेना कें भी लौटै, गोरखपुर तें हम्में छोडिये आवें पारौं नी। कखनी या कहिया घुरै के विचार छौ?"

"तें, हम्में अपनों मनों के सब योजना बताय देलियै। यहाँ तक कि—जों हमरा सरकारें नै जावें देलकै, तें कोय-न-कोय तरीका सें पाकिस्तानी सीमा में चल्लों जैतै आरो ई गुरु सिनी के अस्थान देखिये कें आबे लौटवै, ते जानै छैं, हमरों दोस्त की कहलकै? कहलकै—कनौजिया हम्में यहा बग्गी सें तोरा अमृतसर के आखरी सीमा पर छोड़ी देभौ। एकरों वास्ते तोरा कोय मोटर-रेल करै के जरूरत नै छै। खाली हमरों लें तोहें एतने करियें कि जबें गुरु नानक देव के पवित्र थान पहुँचवे, तें हमरो तरफों सें दुआ-सलाम करलें अइयैं कि गाँव में जे परिवार छोड़ी ऐलों छियै, ऊ सही-सलामत रहें!" ई कही कें काका चुप होय गेलों छेलै।

"की होय गेलौं, काका?" तेतरी पुछलें छेलै।

"कुछ नै। कोंन रस्ता सें अमृतसर गेलियै, याद करी रहलों छेलियै।" मनों के दुख छुपैतें काका बोललै, "खैर, रस्ता सें तोरा सिनी कें की लेना। बस यही समझी ले कि अपनों दोस्त के मेहरवानी सें हम्में आठे रोज में पंजाब पहुँची गेलियै आरो वहाँ सें अमृतसर। फेनु तोरा ई जानी कें आचरज होतौ कि अमृतसर ऊ सरोवर यानी विशाल तालाब के नाम छेकै जेकरा पाँच-छों सौ साल पहिले गुरु रामदास जी नें अपनों हाथों सें बनाना शुरू करलें छेलै आरो पाँचमो गुरु अर्जुन देव जी नें वही सरोवर के बीचों में आय सें छों साल पहिले गुरुद्वारा बनवैलकै, जेकरा आबें स्वर्ण मंदिर कहलों जाय छै, कैन्हें कि गजा रणजीत सिंह नें बाद में ई मंदिर कें सोना के परत सें मढ़वाय देलकै। आरो हौ जे मंदिर के चारो दिस सरोवर छै, असल में वहा अमृतसर छेकै । अमृत के सरोवर, जेकरे नाम पर पंजाब के ऊ शहरो अमृतसर ही कहावै छै। अइयो कोय

गाँव के नाम पोखरिया मिलै छै। पता लगावैं, तें मालूम होथौ—कोय जमाना में ऊ गाँव में बहुत बड़ों पोखर छेलै। वहा रं। आरो एक बात जानै छैं, तोरा सिनी, हौ सरोवर पाँच सौ बीघा जमीन में फैललों होलों छै ।'' काकां अपनों दोनो हाथ कें खूब पीछू दिस फैलैतें कहलें छेलै ।''

''तें, वहाँ कहाँ रहलौ? कहाँ सुतलों, आरो कै दिन?''

''वहाँ खाय-पीयै के कहाँ कोंन कमी छै, तेतरी ! रोज लंगर चलै छै। जी भरी खा आरो एक अधेलो नै देना। कोय धर्मो के लोग रहें, कोय पंथों के लोग रहें, सब के वास्तें लंगर खुल्ला। आबें खाय लें मिलिये जाय, तें सुतै लें भगवाने एत्तें बड़ों पृथ्वी बनैलें छै कथी लें। फेनु हमरों आँखी में नीने कहाँ! हमरों आँखीं में तें तालबंडी घूमी रहलों छेलै।''

''ई तालबंडियो कोय सरोवर छेकै की?'' तेतरी के उत्सुकताहौ एकदम बढ़लों जाय रहलों छेलै ।

''नै । गुरु नानक के जन्मथान छेकै, जे थान आयकल पाकिस्तान में छै। आजादी के पहिले भारते में छेलै।''

''तें, वहाँ गेलौ केना, काका?''

''हमरे नाँखी कोय फकीर स्वर्ण मंदिर ऐलों छेलै। नै जानौ कैन्हें हमरा पर नजर पड़थैं हमरों नगीच ऐलै आरो कहलकै, 'लगै छै तोहें असकल्ले कोय दूर दराज देशों सें ऐलों छौ, बच्चा।' आचरज तें ई छेलै तेतरी, कि ऊ फकीर अपने बोली में बोली रहलों छेलै।''

''तें तोहें हुनका सें पुछलौ नै, कि हुनी कहाँ सें आवी रहलों छै?'' अबकी पंचु जरा आगु खिसकी कें बाललों छेलै ।

''साधु-फकीर सें की पुछना आरो साधु-महात्मा सें की छुपाना। यही सें जबें ऊ फकीरें कहलकै—तलबंडी ननकाना साहब वास्तें निकललों छौ की, तें हम्में झट सना 'हों' कही देलियै। तबें जानै छौ ऊ फकीर नें हमरा की कहलकै ? कहलकै 'बेटा हमरों साथ चलों।' आरो हम्में बिना कुछ पुछले-पाछले ऊ फकीर के साथें चली पड़लियै। हुनी आगू-आगू आरो हम्में पीछू-पीछू। एक कोस, दू कोस—एकदम सुनसान-बियावन रास्ता।''

''काका, डोंर नै लगी रहलों छेलौं। की ऊ सरंगाबाबा जी छेलै, जे गुदड़ी में बच्चा लै कें भागी जाय छै?'' कनौजिया काकां देखलकै ई पुछतें तेतरी खुद्दे डरी रहलों छै। तें काकां वही ठां अपनों जतरा-कथा

रोकी कें बोललै, ''अच्छा तेतरी, बाँका के की माने होय छै, जानै छैं?''

''नै।''

''ते, जानी ले। बाँका माने—बनलों-ठनलों, जे बहादुर रहें। बहादुर कोय आवैवाला संकट सें डरै छै की? वहू में साधु-फकीर पर की शंका करवों। हिनी सब तें धरती पर देवता के रुपे होय छै। वहू में हौ फकीर तें अपने बोली में बोली रहलों छेलै। हुएँ सकें, हुनियो हमरे नाँखी घरों सें निकललों रहें आरो हुनियो यही कोय इलाकाहै के रहें। बाँके के आसपास के। बाँका की छोटों-मोटों इलाका छै ! आचरज होथौं तेतरी कि हुनियो होने निडर बनलों भारत के पारवाला सीमा में चल्लों जाय रहलों छेलै। ई बात हम्में कभियो नै भूलें पारौं। हों, हुनी एतना हमरा जरुरे कही देलें छेलै कि हमरा सें कोइयो कुछ पूछें—कुछ नै बोलना छै।''

कि तभिये डुबकी आवाज करलें छेलै।

''देखलैं, खिस्सा-गप्पों में हमरा एकरो खयाले नै रहलै कि डुबकी कें आय खानाहौ नै देलें छियै। नहवाय तें देलियै आरो खानाहै नै देलियै। बुढारी के ई दिमाग—भुलाय जाय छियै। आबें हमरा घंटा, दू घंटा डुबकिये पीछू लगलों रहें पड़तै । बाकी तलबंडी ननकाना साहब रों कथा कल। आरो हों, तोरा तीनो लें, जानै छैं, करुआ मोड़ सें पेड़ा मँगवैलें छियौ। पूरे-पूरी दस ठो। दू-दू ठो तोरा तीनो भाय-बहिन आरो दू-दू माय-बाबू लें।'' ई कहतें काकां मड़य के छज्जी पर रखलों ठोंगा निकाली लेलें छेलै आरो तेतरी के हाथों में थमैतें पंचु-बंटु सें कहलें छेलै, केकरो हिस्सा में छीन-झपट नै करियैं! हों! यही लें तेतरी के हाथों में थमैलें छियै। आबें हम्में चललियौ, डुबकी के मोंन भरी के भोजन तैयार करै लें। यही नी बोललों छेलैं, तोहें तेतरी ?'' आरो काका ठहाका मारी के हँसी पड़लै।

॥ सात ॥

कनौजिया काका कें विश्वास छेलै कि आय जबें मँहगी बाल-बच्चा साथें ऐतै, तें ओकरों सिनी के चेहरा पर कुच्छु लब्बों खुशी जरुरे होतै आरो वही होलै भी । जखनी मँहगी बच्चा सिनी के लेलें मचान के नगीच ऐलों छेलै । तें तेतरी यही जोरों-जोरों सें बोलतें फुदकतें-फुदकतें ऐलों छेलैः

पानी ठनको बौंसी केरों
देव रहै सब बान्ही जेरों
पेड़ा-करूआ मोड़ के पेड़ा
बाकी तें सब करै बखेड़ा।

काकां कविता सुनलकै, तें लपकी कें ओकरों दोनो काँखी में अपनों दोनो पंजा डालतें ओकरा आपनों माथा सें हाथ भरी ऊपर उछाली देलें छेलै आरो जल्दीये लोकतें नीचें चौकी पर बैठों कहलें छेलै, ''है कहाँ से सीखी ऐलैं? के सिखैलकौ?''

''मांय पेड़ा खैला के बाद ई कविता पढ़लें छेलै; तें हम्में याद करी लेलियै।''

''एकदम ठीक पकड़लकौ, करुवा मोड़ के पेड़ा के सवादे अलग होय छै । होना कें पुनसिया के पेड़ा के भी कोय जवाब नै छै मतर करूआ मोड़ के पेड़ा खैला के बाद तें जिनगी भर कोय सुआद भूलें नै पारें। चल, कलके पेड़ा नाँखी मीट्ठों कहानी आय सुनै लें तैयार हो जो।''

''एकदम काका। तोहें कलकों बात पुछवौ, तें एक-एक बात हम्में बतावें पारौं।''

''एकदम पुछवौ। तोरा सें पूछौं-नै-पूछौं, पंचु आरो बंटु सें जरूरे पुछना छै।''

ई बात सुनथैं दोनो के कान एकदम खाड़ों होय गेलै; जेना निकट भविष्य में आवैवाला कोय विपत्ति देखाय दै देलें रहें आरो दोनो काका के मुँह दिस मुँह करी कबूत्तर-बच्चा नाँखीं बैठी रहलै।

''तें सुन, ऊ फकीर साथें हम्मू पैदले-पैदल ननकाना साहब दिस चलें लगलां।''

''ई ननकाना साहब की होलै आरो तलवंडी की होलै?''

"दोनो एक्के जग्घों के नाम छेकै। तलबंडिये के नाम बाद में ननकाना साहब होय गेलै।"

"तें, ओत्तें दूर पैदले चल्लों गेलौ! गोड़ नै दुखलौं?"

"कथी लें दुखतियै। कोंन मारे दूरे छै अमृतसर सें ननकाना साहब। बस तीस-बत्तीस कोस दूर। ओकरा से बेसी तें भागलपुर के गंगा सें देवघर दूर होतै। नै बेसी तें कम-सें-कम कोस भरी तें जरूरे। देखै नै छैं, सौन-भादो में जनानियो सिनी भोरे जोंल भरै छै आरो भिहानै जोंल ढारी आवै छै; जेकरों कबूलती रहै छै। हम्में तें फकीर बाबा सार्थें दू दिन में ननकाना साहब पहुँचलों छेलियै। आरो की बतैयौ तोरा सिनी कें, वहाँकरों गुरुद्वारा देखिये कें सब थकान दूर होय गेलै। अमृतसर के स्वर्णमंदिर से कम नै छै। महाराजा रणजीत सिंह के बनवैलों गुरुद्वारा छेकै।"

"से की, गुरु नानक जी बहुत बड़ों साधु छेलै?" तेतरी दोनो हाथ फैलैतें पुछलें छेलै।

"बहुत बड़ों। बड़ों तें वही नी होय छै, जे आदमी-आदमी में भेद नै करें आरो यही बताय वास्तें नानक देव हिन्नें आसाम तक गेलै, तें दक्षिण में लंकाहौ तांय।"

"वही लंका, जहाँकरों राजा रावन छेलै?"

"हों वहीं। वहीं नै, हुनी कैलास पर्वत तक गेलों छेलै आरो पच्छिम में वहाँ तांय, जहाँ मुसलमान सिनी के पवित्र असथान छै, जेकरा मक्का मदीना बोललों जाय छै।"

"हों, है नाम शेखावत चाचा सें सुनलों छियै । तें नानक देव पैदले ओत्तें-ओत्तें दूर चल्लों गेलै?"

"आरो नै तें की। ई लिखलो छै कि हुनी चौबीस साल में अट्ठाईस हजार किलोमीटर रों पैदले जातरा करलें छेलै । अट्ठाइस हजार किलोमीटर के मतलब होलै—नों हजार कोस, यानी कि अठारह हजार मील ।"

"तें रस्ता में हुनका कोय रोकलकै-टोकलकै नै?"

"टोकलकै भी, रोकलकै भी। एक दाफी तें बादशाह बाबर नें शंका में हुनका बंदीयो बनाय लेलें छेलै, जबें हुनकों चेहरा पर देवतावाला

तेज चमकतें देखलकै, तें जल्दीये छोड़ी देलकै। होनै कें उड़ीसा के जगन्नाथ मंदिर में हुनका ढुकै सें रोकी देलों गेलै छेलै, कैन्हें कि हुनकों भेष-भूषाहे हेनों छेलै, जे रं मुसलमान खलीफा के होय छै।''

''आय? तबें की होलै?'' तेतरी तुरत पुछलें छेलै।

''होतियै की। भगवान जगन्नाथ नें वहाँकरो राजा के सपना में सब बतैलकै आरो राजां तुरत मंदिर में हुनकों प्रवेश के आदेश जारी करैलकै। हेने छेलै गुरु नानक देव। बाद में सब कुछ सें संन्यास लैकें हुनी रावी नदी के किनारी पर जीवन बिताना शुरू करी देलकै आरो वहीं हुनी ई माँटीवाला देह तेजी देलकै। जानै छैं तेतरी, हुनी अपनों गुरुवाला गद्दी अपनों बेटा कें नै दै कें, अपनों एक चटिया कें सौंपी देलकै जेकरों नाम लहणा छेलै आरो वही सिक्ख पंथ के दोसरों गुरु बनलै। तबें हिनकों नाम अंगद देव होय गेलै। है नाम गुरु नानके जीं के देलों छेलै।

''गुरु अंगद देव तें रहैवाला भारत के पंजाबवाला फिरोजपुर के छेलै आरो भगवती माय के घोर भक्त। बाद में हिनी नानकदेव सें मिलै लें करतारपुर गेलै, तें हुनकों व्यक्तित्व सें प्रभावित होय कें हुनके शिष्य बनी गेलै। गुरु बनला के बाद गुरु अंगद देव अपनों गाँव खडूर आवी गेलै, जैठां हुनी अपनों सौंसे जीवन बितैलकै। पंचु, जानै छैं करतारपुर कहाँ छै—आयकों पाकिस्तानवाला पंजाब में, जे रावी नदी के किनारी बसलों छै। हम्में वहू जग्घों पर गेलियै। करतारपुर में नानकदेव के स्मृति में बनैलों गुरुद्वारा छै आरो रावी नद्दी के बात उठलै, तें हम्में घुमतें-घुमतें वहूं ठियां गेलियै—जोन ठियां गुरु अर्जुनदेव के स्मृति में बनलों गुरु डेरा साहब छै—हिनका विधर्मी बादशाह नें वहीं शाही किला के नगीच रावी नद्दी में फेकवाय देलें छेलै। ऊ असथान लाहौर में छै आरो करतारपुर सें लाहौर छवे करै कत्तें दूर! बस एक सौ चालीस किलोमीटर ।''

कहै के तें काकां ई सब कही गेलै मतर कहला के बाद काकां देखलकै, तें देखै छै सबके चेहरा के खुशी हठासिये उड़ी गेलों छै। काका कें लगलै ओकरा सें भारी भूल होय गेलै। नद्दी में फेकवाय के बात बच्चा-बुतरू कें नै बताना चाहियों। ई सोचथैं हुनी तुरत कहलकै, ''मतुर विधर्मी कें की मालूम कि पहुंचलों योगी-फकीर कहूँ की मरै छै, भले हुनका गरम ताबा पर चढ़ावों, कि धिपलों लोहों सें दागों कि नद्दिये में

कैन्हें नी फेकवाय दौ। गुरु अर्जुनदेव के देहों सें ज्योति निकललै आरो सीधे ज्योति मे मिली गेलै।'' काकां सरंग दिस मुँह करी हाथ जोड़तें कहलकै।

सचमुच काका के ज्योति सें ज्योति मिलैवाला बातों के असर तेतरी सें लै कें पंचु-बंटुओ पर हेनों छेलै कि सबके चेहरा पर फेनु सें वही चमक आवी गेलै; जेना पैसा सें भरलों-हेंरैलों बटुआ मिली गेलों रहे। तें काकाहों अपनों बात कें आगू बढैतें कहलकै, ''तोरासिनी कें, है बतैये लें भूली गेलियौं कि हौ सब ठियां जाय में फकीर बाबा कभियो हमरा सें अलग नै होलै। खाली यही बोलै—जबें तोरा तरण-तारण पहुँचाय देवौं, तबें हम्में फेनु लाहौर लौटी ऐवै। हुनी जहाँ-जहाँ हमरों साथ जाय—सब कुछ बतैलें जाय। हुनकै सें हम्में जानलें छेलियै कि तरण-तारण नगर गुरु अर्जुन देवे के बसैलों नगर छेकै, जहाँकरों आश्रम में कोढ़ी सिनी के सेवा होय छै, अभियो होतें होतै। गुरु अर्जुन देव पाँचमों गुरु छेलै आरो हिनिये गुरुग्रंथ के संपादन करलें छेलै। है काम हिनी चौदह सालों में चौदह सौ तीस पन्ना के ग्रंथ कें गुरुमुखी लिपि में लिखी कें पूरा करलकै। लिपि बुझै छैं, तेतरी?''

तेतरीं नकार में अपनों मुड़ी दू दाफी दायां-बायां करी देलें छेलै।

''अक्षर के रूप। अंग्रेजी अक्षर के रूप अलग होय छै, उर्दू अक्षर के अलग। हिन्दी अक्षर जेना देवनागरी कहावै छै; होनै कें पंजाबी अक्षर गुरुमुखी कहावै छै।''

''ओ!''

''तें, गुरु अर्जुन देव जी नें गुरुमुखी में ग्रंथ कें लिखैलकै। ऊ ग्रंथ करतारपुर में अभियो धरलों होलों छै। हिनी अपन्हौं बहुत अच्छा कवि छेलात आरो जेन्हों कि तोरा सिनी कें बताय चुकलों खियौं कि अमृतसर मे स्वर्ण मंदिर हिनके बनवैलों छेकै।''

''तबें तें हिनी ढेरे काम नी करलें छेलै, काका!'' बंटु पुछलें छेलै।

''यै में की शक। तबें गुरु अंगद देव जी के काम भी कम नै छै। ऊ फकीर बाबां ही बतैलें छेलै, कि अपनें गुरु नानक देव के पद सिनी जहाँ-जहाँ आरो जेकरों-जेकरों लुग पड़लों छेलै, हिनिये एक ठियां इकट्ठा

करवैलें छेलै। एतन्है नै, अपनों गुरु के जीवन सें संबधित सब कथा-घटना कें शारदा लिपि में लिखवैलकै। आबे है नै बुझिहें कि शारदा लिपि कोय अलग लिपि छेकै। ई वही छेकै जेकरा गुरुमुखियो कहलों जाय छै। चूँकि गुरु के पद शारदा लिपि में ऐलै, तें ऊ गुरुमुखी भी कहलैलै। हिनियो पहुँचलों कवि छेलै। गुरुग्रंथ साहिब में हिनकों बौंसठ पद संकलित छै।

''तें की गुरुग्रंथ साहिब में खाली सिक्ख गुरुवे के कविता सिनी छै, काका?''

''नै-नै। सिक्ख पंथ के दस गुरु के पद कें बादो ई ग्रंथ में कबीर रविदास, जयदेव, मीराबाई आरनी के पद सब संकलित छै।''

''ओ! तें आरो की-की बतैलें छेलौं, ऊ फकीर बाबां?''

''ढेर-ढेर। मतर ई आयको बात थोड़े छेकै। आय सें साठ-पैंसठ साल पहिलकों बात छेकै। आधों सें अधिक तें भुलियो चुकलों छियै। हुनी बहुत कुछ आरो बतैतियै मतर तब तांय फरीदपुर के सीमा पर आवी गेलों छेलियै, तें हुनी कहलें छेलै, 'आबें तोहें भारत के सीमा में छों आरो अमृतसर के एकदम नगीच। आबें तोरा आबै-जाय में कोय रोक-छेक नै होथों। तोहें जा!' हम्में हुनकों गोड़ छूवी कें प्रणाम करलें छेलियै आरो अपनों वही झोला संभालनें अमृतसर दिस बढ़ी गेलियै। मतर हौ फकीर कें कन्हौ नै भूलें पारलियै। आय तांय नै। हों अमृतसर लौटला के बाद हमरा डुबकी के भी बहुत ख्याल ऐलै कि जों ई हमरों साथ होतियै, तें सौंसे पंजाब की, पटना तांय घुमिये कें घोंर लौटतियै।''

कि तखनिये डुबकी जोर के चिग्घाड़ मारलें छेलै। काकां घुमी कें देखलकै, तें दौड़ी कें ओकरों लुग पहुँची गेलै आरो ओकरों मुँहों सें आमों के कर्रो टहनी हौले-हौले बाहर निकाली लेलकै, फेनु टुकड़ा-टुकड़ा करलों केला के पत्ता साथे थंभ ओकरों आगू में रखी कें लौटी ऐलै । बैठतें-बैठतें बोललै, ''भूख लगला पर कोय कड़ा-कोमल के कुछ ख्याल करै छै की। खाय लै छै आरो पेट बिगाड़ी लै छै। यही सें एकरों खानाहो पर ध्यान रखै लें लगै छै।''

''अच्छा काका, माय बोली रहलों छेलै कि हाथी शृंगार-पटार करी कें बीहा-शादी में नाचवो करै छै। की सहिये में?'' तेतरीं अपनों बालों कें संवारतें बोललै ।

“है केन्हौ कें हुएँ पारें की? एत्ते भारी भरकम देह! भला नाँचें पारतै की! तबें नाँचे के नाम पर सूँढ़ ऊपर-नीचे, हिन्नें-हुन्नें ही थोड़ों गोड़ उठावे पारें। हों दौड़ करें पारें। जहाँ तक शृंगार-पटार के बात छै, ऊ तें होय छै। तेतरी, तोरा जानी कें आचरज होतौ कि अपनों देश के राजस्थान के जयपुर जिला में हर साल, ठीक होली के अवसर पर, हाथी महोत्सव होय छै; तबें हथिनी सिनी कें खूब शृंगार-पटार करलों जाय छै। कपार सें लैकें सूँढ़ तक रंगों सें सजैलों जाय छै। हथिनी सिनी के गोड़ों के लों काटलों जाय छै। ओकरों मोंन लायक किसिम-किसिम के ओकरा खाना खिलैलों जाय छै, तबें ऊ सब दौड़ के प्रतियोगिता में भागो लै छै। है हाथी महोत्सव विश्व हाथी-दिवस, जे पच्चीस सितम्बर कें मनैलों जाय छै, ओकरा सें अलग होय छै। अरे बंटु तोहें कुछ हाँ-हूँ नै बोलै छैं। कुच्छू तें बोलैं।” काकां पीछू घूमतें बंटु कें माथा पर हाथ फेरतें पुछलें छेलै, ते ऊ बोललै, “काका, महोत्सव में खाली मेदनीये हाथी भाग लै छै, नर हाथी नै?”

“असल बात छै, बंटु, कि मेदनी हाथी नर हाथी सें बेसी अनुशासित होय छै; नर हाथी सें बेसी शांत। तोरा ई जानी कें आचरज लगतौ कि झुंड में जे हाथी चलै छै, तें सब किस्म के निगरानी लेली झुंड के आगू में कोय बुजुर्ग मेदनीये हाथी रहै छै आरो पिछुवो भी। हों, संकट के समय नर हाथी जरूरे आवी जाय छै।” आरो एतना कही काको तेतरी दिस घुमतें बोललै, “तें हम्में हाथी महोत्सव के बारे में बताय रहलों छेलियौं—है जानी ले—ई खाली अपने देश मे नै, अपनों देशों सें बाहर थाइलैंड में भी हाथी सिनी कें एतवारे-एतवा भोज देलों जाय छै। खूब लम्बा टेबुल पर हाथी के मनपसंद के केला, साग-सब्जी, पत्ता रखलों जाय छै आरो सौ सें लैकें दू सौ हाथी भोज में शामिल होय छै। आखिर कैन्हें नी ई हुएँ; हाथी थाइलैंड के राष्ट्रीय पशु जे छेके। हेना कें तें अपनों राज्य सें सटले झारखंडो में हाथी राजकीय पशु घोषित छै मतर थाइलैंड में हाथी के बड़ी मान-सम्मान छै।”

“ऊ कैन्हें काका?” पंचुं, बंटु कें जरा हटैतें पुछलें छेलै ।

“तोरा बतैलें छेलियौ नी, बुद्ध के जनम के पहिले बुद्ध के माय माया देवीं सपना में देखलकै, कि एक सफेद हाथी ओकरों कोखी में

प्रवेश करी रहलों छै। तें, जानी लें थाइलैंड में बुद्ध के बड्डी सम्मान छै; यही सें हाथियो के बड्डी सम्मान छै....अरे, तोरासिनी कें है बताय लें भुलिये गेलियौ, कि डुबकियो के हर साल जनमदिवस धूमधाम सें मनैलों जाय छै।''

''ई अपनों डुबकी हाथी के?'' तेतरीं घोर आचरज सें पुछलें छेलै, ''काका तोहें ई केना जानलौ कि एकरो कहिया जनम होलों छेलै?''

''बाबू-हाथे जे एकरा बेचलें छेलै, वहीं एकरों जन्मदिनो बाबू कें बतैलें छेलै। बाबू जनमदिवस मनाय छेलै, तें हम्मू मनाय छियै। फेनु कल्हे तें एकरों जनमदिनो छेकै। कल एकरा रजौन लै जैवै। वहीं एकरों शृंगार-पटार होतै, फेनु वहीं ठियां सें यें दक्खिन दिस घूमी सूँढ़ उठैलें बौंसी के भगवान मधुसूदन कें प्रणाम करतै; फेनु पच्छिम मुँह होय कें जेठोर बाबाओ कें; तबें उत्तर मुँह होय कें अजगैबी बाबा साथें बाबा बूढ़ानाथ कें तबें पूरब होय कें बटेसर बाबा कें—ई सब होला के बादे घोंरवाला गजभोग लेतै।''

''कहिया मनैलों जैतै डुबकी के जनमों दिन ?''

''तोरों ध्यान कहाँ रहै छौ, पंचु ? कहैलियौ नी, कल्हे छेकै। कल तोरा सिनी कें कोइयो कीमतों पर आना छै। तखनिये, जखनी भगवान सरंगों में पाँच हाथ ऊपर आवी जाय। तखनी तांय हम्में डुबकी के साथ जरूरे रजौनों सें लौटी ऐवै। कल एकरों जनमदिवस पर तीन-तीन सिक्ख गुरु के कहानीयो होतै। केन्हो रहतै?'' काकां थोड़ों तनी कें बोललै ।

''बड्डी बढियाँ; खूब बढियाँ।'' मँहगी छोडी कें तीनो बच्चा एक्के साथ बोली पड़लों छेलै।

''तें, ठीक छै, आयकों खिस्सा यही खतम। आय तोरा सिनी लें लड्डू, आम, लीची नै, कहलगाँव के रसकदम मँगवैलें छियौं।'' फेनु मँहगी दिस होय कें बोललै, ''कल जे बाटी आनलें छेलैं, वही में रसकदम छै। उतरबारी कोठरी में ढकलों रखलों छै। तेतरीं आय बेसी पुछले छै, एकरा दू रसकदम मिलतै। याद रखियैं।''

मँगनी तीनो बच्चा साथें उठलै, तें कनौजियो काका उठी कें डुबकी के गोड़ों सें बंधलों जंजीर खोलै लें बढ़ी गेलै।

॥ आठ ॥

देर रात तांय तेतरी कें नीन नै ऐलै। कै दाफी माय के बगलों में सुतलों उकुसु-पुकुस करतें रहलै मतर कथी लें नीन ऐतै। दू-एक दाफी मांय डॉटवो करलें छेल, "आय तोरा होलों की छौ? पेटों में रसकदम उछली रहलों छौ की ?" माय के उस्सट-रं बोली सुनी कें वैं उकुस-पुकुस करवों तें छोड़ी देलकै मतर चाहियो कें वैं नीन नै लानें पारलकै। लै दै कें आँखी में एक्के दिरिश घूमै कि डुबकी के ललाट पीरों-उजरों रंगों सें रंगलों छै; ऊ सूंड़ उठाय-उठाय कें; कभियो कटि-कटि अगला टांगो उठाय कें शंखे नाँखी बोली उठै छै आरो फेनु एक्के दाफी में आगू के दर्जन भरी केला सूँड़े में समेटतें मुंहों में रखी लेलें छै। ई सब सोचत्हैं ऊ कखनी सुतलै आरो कखनी उठलै—केकरो नै पता लगलै।

भोरे ओकरी मांय उठलै, तें बिछौना पर तेतरी कें नै देखी कें मिजाज धक-सना रही गेलै। धडपड़ाय कें ऐंगनों ऐलै, तें देखै छै तेतरी अपन्है सें चूल थकरवों करी रहलों छै, तें हँसतें हुएँ तेतरी-माय ऐंगनों सें बाहर होय गेलै।

अभी भगवान सरंगों में पाँच हाथ उठलो नै होतै कि दस हाथ आगुवे होलें तेतरी काका के बखारी पर पहुँची गेलै। पंचु आरो बंटू अपनों बाबुए सार्थे-सार्थे बखारी पर ऐलों छेलै।

आय डुबकी के रंगे-रूप बदली गेलों छेलै। घोरलों लाल, पीला, नीला गुलाल सें ओकरों माथों सें लैकें आधों सूँढ़ कमल के पत्ता के नक्शा सें सजैलों गेलों छेलै। कंठों में मुलायम रस्सा सें बंधलों छोटों-छोटों घुंघरू आरो सबसें नीचें एक घंटी के आवाज सें डुबकी आय कुछ बेसिये आगू-पीछू होय रहलों छेलै। एतन्है होतियै, तें होतियै, आय काकां ओकरों चारो गोड़ों में बड़ों-बड़ों घुँघरूवाला पायलो बान्ही देलें छेलै।

"डुबकी तें आय ऐरावत हाथी नाँखी शोभी रहलों छौं, दादा!"

"आय की, मँहगी; हमरों लेली तें कभियो ऐरावत सें कम नै रहलै।"

"एकरों दाँत बड़ों-बड़ों होतियै, ते आरो अच्छा लगतियै। की

काका?''

''मेदी छेकै नी। मेदी हाथी के दाँत छोटों होवे करै छै। फेनु अपनों दोनो बित्ता के अंगुठा मुँहो के कासों सें सटेतें बोललों छेलै, ''जों नर हाथी होतियै, तें हाथ-हाथ के एकरो दाँत होतियै'' आरो एतने कही हाथीभोग दिस इशारा करतें कहलें छेलै, ''आय डुबकी के खाना में बेसन के दस लड्डुओ छै। जन्मदिवस नी छेकै। ई खुशी में हमरो सिनी आय कुछ खास खैवै। अंदाज लगाव कि हमरों सिनी वास्तें की हुएँ पारें? अच्छा बंटू तोहें ई बताव, कि अपनों अंग प्रदेश के खान-पान में की-की नामी छै?''

''करुआ मोड़ के पेड़ा।'' बंटु झट सना बोली पड़लै कि कहीं कोय बोली न दें।

''ऊ तें याद रहवे करतौ आरो दोसरों?'' काका के पुछला पर वैं तेतरी दिस देखलें छेलै।

''तेतरी दिस कोय नै देखें। तोहें बोल पंचु—अंग प्रदेश के नामी खान-पान?''

''बौंसी के गुडझिलिया।''

''ई होलै नी। बौंसी के मुरियो-घुँघनी कम नामी नै छै। आरो कुछ?'' तें पंचुओ तेतरी दिस देखें लगलै।

''पढ़लें छैं—बंटा आरो दुक्खीं कें। पढ़ें जाय कें—'बंटा' आरो 'सात समंदर तेरह नद्दी'। दोनो किताबों के दोनों छौड़ा कत्तें तेज छै आरो एक तोरा दोनो भाय! अच्छा तें तोंही वताव, तेतरी!''

तेतरी तें चाहिये रहलों छेलै, कि काका सबसें पहिले ओकरे सें पूछें, तें ऊ रटलों पाठ नाँखी बोली पड़लै, ''कजरेली के लालशाही; घोड़मारा के पेड़ा; अमरपुर के गट्टा; नाथनगर के बालूशाही-जिलेबी आरो कलहगाँव के रसकदम ।''

''कमाल ! कमाल ! कमाल करी देलैं ! मतर है सब तोहें जानलैं केना?'' काकां अपनों आँख बड़ों-बड़ों करतें पुछलकै ।

''माय-बाबू बैठी के गप करै छै नी, वांही सें।''

''तें कल तोरों लें नाथनगर के बालूशाही आरो जिलेबी एकदम ऐतै। लालशाही तें हम्मी जाय कें लै आनवै। तबें देखवै—के कत्तें उड़ावें पारै छैं। इखनी तें वहा चलतै, जे डुबकी लै रहलों छै।''

“की घास-फूस, काका ?” तेतरी बोललै ।

“अरे, नै गे। शुद्ध घी में भुजलों बेसन के लड्डू। बंटू ऐंगनों जो आरो जोंन घरों के केबाड़ी खुल्ला होथौ, वही में घुसीकें थरिया उठाय लानें—लड्डूवाला थरिया।”

काका के कहला पर बंटु पंचु कें देखलें छेलै—मतलब साफ छेलै कि ‘तहूं साथ चल; असकल्लों थरिया नै उठतौ।’

कटी-टा देर होना छेलै, कि तेतरी उठलै आरो ऐंगनों दिस दरबनियां दै देलकै। हुन्नें सें लौटलै, तें ओकरों माथों में थरिया छेलै, जेकरा वैं दोनो हाथों सें धरलें कल्हे-कल्हे डेग मारलें लौटी ऐलों छेलै।

“है तें हाथी के मुँह लायक लड्डू बनवैलें छौ, दादा। आधो लडडू पार लगना मुश्किल।” मँहगी मुस्कैतें बोललै ।

“की होतै। टोला के अपनों लोगों के बीचों में बाँटी दियैं। तोरा घरों के काम छौ, मंहगी, तें जावें पारें। हम्मे तीनो कें घोंर छोड़ी ऐभौ।”

“नै दादा। गुरुजी के कहानी तें हमरौ सुनना छै। वही लोभें सब काम-धाम छोड़ी कें आवी जाय छियै। आबें गाँमों में होन्हौ कें सतसंग कहाँ होय छै!”

“से तें ठिक्के। होना कें मोंन बदली गेलों छेलै मतर आबें सुनैवै।” ई कही कें काका बंटू दिस मुँह करतें कहना शुरू करलकै, “खूब मोंन लगाय कें सुनियें, बंटु। गुरु अमर दास के कहानी तोरों वास्तें आरो जरूरी छै।” फेनु तेतरी दिस होतें कहें लगलै, “गुरु अमर दास जी सिक्ख-पंथ के तेसरों गुरु छेलै, जिनकों जनम अमृतसर के वासरके गाँव में होलों छेलै। बड्डी धार्मिक। अपनों गाँव सें पैदले हर साल हरिद्वार जाय—गंगा असनान लेली।”

“अमृतसर सें हरिद्वार! पैदले?” तेतरीं हाथ-चमकैतें बोललै ।

“हों, तखनी उपाइयो की छेलै। रस्ता में आश्रम, संत-मुनि सें मिलतें-जुलतें पहुँची जाय। इक्कीस साल हुनी हेनों करतें रहलै। ई संयोगे कहों कि गुरु अनंग देव के बेटी अमरो के बीहा गुरु अमर दास रों भतीजा सें होय गेलै, तें जबें अमरो अपनों ससुराल ऐलै, तें ससुरारी में मौका बेमौका गुरुवाणी गैतें रहै, जे सुनी कें अमर दास जी एत्तै प्रभावित

होलै कि हुनी गुरु अनंग देव के गाँव खंडूर साहिब पहुँचीं गेलै, आरो हुनकों शिष्य बनी गेलै। तखनी अमर दास के उमिर बौसठ साल के छेलै आरो गुरु अनंग देव मात्र पच्चीस सालों कें। तें जे ज्ञानी होय छै, गुरु होय छै, ओकरों उमिर थोड़े देखलों जाय छै। सोच्हें, गुरु अमर दास अपनों गुरु अनंग देव के नहावै वास्तें भोररिये चार बजे उठी कें पैदले व्यास नदी सें घैलों भरी पानी लानै, जे खंडूर गाँव सें तीन कोस के दूरी पर छै। एक तोहें छैं, बंटु, कि बाँस भरी के दूरी पर कोठरी में रखलों थरियो नै लानें पारले। गुरु अमर दास के शिष्या ते तेतरीये नी बनें पारें बंटु! खैर जबें अमर दास जी तेहत्तर साल के छेलै तबें गुरु अनंग देवें हुनका गुरुगद्दी पर बिठैलकै आरो अपनों जिनगी के पनचौनवे वर्ष तांय अमर दास जी जीत्तों रहलै। हुनिये व्यास नदी के किनारा पर गोइंदवाल शहर बसैलें छेलै।'' कहतें-कहतें काका के नजर पंचु पर पड़लै—ते पंचु सें बंटुओ पर—जे अपनों मुड़ी झुकाय कें बैठलों छेलै।

बात कें समझतें काकां तुरत बंटू सें कहलें छेलै, ''जानै छैं, बंटु, गुरु अमर दास नें एक नियम बनैलें छेलै, लंगर में सब एक साथ बैठीकें खाना खैतै। बड़ों-छोटों, ऊँच-नीच के कोय बात नै आरो जे ई बात कें नै मानतै, ऊ हुनका सें नै मिलें पारें, भले ऊ राजाहे; बादशाहे कैन्हें नी रहें। यही कारण जबें तखनिकों बादशाह अकबर व्यास नद्दीये होलें लाहौर जाय रहलों छेलै, तें गुरु अमर दास सें मिलै के इच्छा जाहिर करलकै। गुरु कें खबर करलों गेलै, तें हुनी वही कहलकै, अकबर राजा छेकै तें की, पहले लंगर में सबके साथे-साथ बैठी कें खाव, तब्हैं हमरा से मिलें पारें आरो वहा होलै। सबके साथें बैठी कें राजा अकबरें खाना खेलकै, तबें गुरु भेंटलै। आबें अगला गुरु के कथा तभिये भेटें पारें, जबें हमरोसिनी मिली कें थरिया पर के लड्डू उठाय-उठाय कें खाना शुरू करी दौं।'' आरो ई कही कें काकां बंटु के हाथों में पैला भर के बड़का लड्डू थमाय देलकै, तें बंटु के खुशी देखी कें सब्भै खिलखिलाय पड़लै।

॥ नों ॥

आय मँहगी अपनों बच्चा सिनी साथें नै आवें पारलै; कुछु कामे हेनों आवी गेलै। बारी में पानी के धार नै बहैतै, तें बीहन की रोपतै, से तेतरी, बंटु आरो पंचु कें कुछ दूर अरियाती कें आपने घोंर लौटी ऐलै। एकरा सें तेतरी कें तें कोय फरक नै पड़ी रहलों छेलै मतर पंचु आरो बंटू बड्डी खुश छेलै। होना कें आबें बगीचावाला आमों गाछी पर भले आम झूलतें रहें मतर रस्ता पर के आमों गाछी पर एक्को आम दिखाय शायते छेलै। कोय गाछों पर छेवो करलै, तें ओकरों नीचें लाठी लेलें जोगबारों जरुरे छेलै। भले गाछों पर आम नै रहें मतर ढेपों चलाय में माहिर पंचु गाछी पर ढेला नै फेकतियै, ई भला केना होतियै। काका रों मड़ैया जब तांय दू बाँस दूर नै रही गेलै, तब तांय हनियाय-हनियाय कें गाछी पर दोनो भाय ढेपों चलैतें रहलै।

एक ठियां तें एक गाछी के नीचें दोनो रुकवो करलों छेलै, कैन्हें कि गाछी सें फुनगी पर कुछ आम लटकतें दिखलै, फेनु की छेलै बंटुं; पंचु के धौनों पर लात रखी गाछी के मजगूत ठहार पकड़लकै आरो सीधे दोसरों ठार पर लात रखी कुछ आरो ऊपर चढ़ी आमों दिस हाथ बढ़ैलें छेलै मतर दुर्भाग्य कहों कि हुन्नें सें जोगवारो के आवाज होलों छेलै, तें बंटु सीधे नीचें कुदकलै आरो दोनो लगे छड़पनियां काका के मड़ैया पहुंची गेलों छेलै।

जबें दोनो नें, तेतरी कें काका साथें ऐतें देखलकै, तें दोनो एक दूसरा के मुंह ताकतें एकदम्मे सकड़दुम होय गेलै। दोनो यहाँ सोचलकै कि तेतरीं जरूरे सब बात बताय देलें होतै।

''अरे, डरै के की बात छै। काका केकरो डाँटै या मारै थोड़े छै। आय तक तें हुनका केकरौ, कोय गलती पर डपटतें नै देखलें छियै।'' बंटु पंचु कें ढाढ़स बँधैतें कहलें छेलै।

''तोहें नै समझबें। हुनी कहानीये सें हेनों बात कही दै छै कि बुझैवाला बुझी जाय छै। तेतरीये पहिलें आवी गेलै आरो हमरा सिनी इखनी। काका कें लाल बुझक्कड़ समझें। हुनी सब कुछ समझी गेलों होतै।'' पंचु अभी आरो कुछ बोलतियै कि वैं ओकरों पीठी में चुट्टी काटतें

चुप रहै के इशारा करलकै।

“आवी गेलैं। आय तेतरीं तोरा दोनो कें पिछुवाय देलकौ नी। कोय बात नै। आय तोरा सिनी कें अपनों बैलगाड़ी पर बिठाय कें अपनों बगीया घुमैवौ। पत्ता भर भी रौद नै मिलतौ। आय गाड़िये पर कथा-कहानी चलतै आरो गाड़िये सें घोंर पहुंचाय ऐवौ। केहनो रहतें बंटु?” काकां आँख बड़ों करतें मुड़ी हिलाय-हिलाय कें कहलें छेलै ।

“बड्डी बढियां, काका।”

“तें, तोरा तीनो यहीं रहें। बैलो कै दिन सें घुमलों-घामलों नै छै, यही बहाना घुमी लेतै। तुरत आवै छियौ।” कही कें काका गेलै आरो कुछुवे देरी में बैलगाड़ी पर बैठलों, बैलों के पैनों सें हें-हें हाँकतें ऐतें दिखैलै आरो ठीक तीनो सें दस हाथ दूरे गाड़ी रोकी देलकै। गाड़ी रुकना छेलै कि बंटु आरो पंचु चक्के पर लात धरतें छलांग मारी-मारी गाड़ी पर जाय बैठलै मतर तेतरी गाड़ी के पीछूवाला हिस्सा पर केहुनी बल्लें चढ़ै के कोशिश करें लगलै, जे देखी काका झट-सना नीचें उतरलों छेलै आरो तेतरी कें उठाय कें अपनों पीछू बिठाय देलै छेलै। आपनें पहिया के सहारा लै गाड़ी के आगू बैठी रास पकड़ी लेलकै।

“काका, गाड़ी की जोरों सें चलतै?” तेतरी दोनो हाथों सें गाड़ी के दोनो दिसवाला बाँस कें पकड़तें बोललै।

“जोरों सें चलतै तें की। देखैं नै छैं—कत्तें मोटों पुआल के गद्दा-गेंदरा नीचें बिछैलों छै। टप्पर लगाय दियै, तें सब समझतै, कोय मेला देखै लें जाय रहलों छियै।” एतना कही काकां बैलों कें टिटकारलें छेलै ।

बैलगाड़ी हौले-हौले आगू बढ़े लगलों छेलै आरो काका के कहानियो।

“अच्छा बंटु, तोरा सें एक बात पूछै छियौ कि जीवन में लोभ-लालच, हाही के परिणाम अच्छा होय छै, की खराब? आदमी कें लड़तें-झगड़तें जिनगी काटना चाही कि शांति से?”

काका के बात सुनथैं पंचु गौर सें बंटु कें देखलें छेलै; जेना कहतें रहें—देखलैं नी, कहलें छेलियौ, कि काकां घुमाय-फिराय कें गलती उगलवैय्ये देतौ। आबे दैं जवाब।

मतर बंटु कुछ नै बोललों छेलै। नै बोललो छेलै, तें काकाहौं दोबारा नै पुछलें छेलै आरो सीधे गुरु अर्जुन देव के याद दिलेतें कहलें छेलै, "हुनकों साथें बादशाह जहाँगीर नें अच्छा बर्ताव नै करलकै, तें तोरा सिनी जानै छै—एकरों परिणाम की होलै। हौ परिणाम के बारे में तें जहाँगीरें सपनाहौ में नै सोचलें छेलै।" ई बात काकां हेना कहलें छेलै कि सब्भे के ध्यान हुनके ओर होय गेलै।

काका यही देखै लें घुमलो छेलै कि बच्चा के ध्यान कन्नें छै आरो ई देखी कें कि सब्भै हुनके दिस मुँह करलें होलों छै, कहना शुरू करलकै, "गुरु अर्जुनदेव के इकलौता पुत्र हरगोविन्द जखनी गुरुगद्दी पर बैठलै, तखनी हुनकों उमिर मात्र एगारह साल के छेलै मतर सब बातों कें जानी रहलों छेलै कि बादशाहें केना ओकरों बाबू कें बंदी बनाय कें लै गेलों छेलै। नतीजा ई होलै कि गुरु हरगोविन्द जी धार्मिक ज्ञान तें देवे करै पर बेसी हुनकों ध्यान सेनाहै तैयार करै पर रहें लागलै। सेना समझै छैं तोरासिनी ? सेना मानी, सिपाही सिनी के जेरों, जे देश या समाज के रक्षा लेली होय छै। पहिले जे शिष्य होय छेलै ऊ अपनों गुरु वास्तें धन-दौलत कपड़ा-लत्ता लानै छेलै; आबें जे शिष्य आवै, ऊ तलवार, भाला, कटार आरनी के साथें घोड़ा गुरु कें भेंट करै लें लानै। कैहिने कि गुरु हरगोविन्द जी के हेने आदेश छेलै। हिनी अपनों शिष्य सिनी कें तलवार आरनी चलावै के तौर-तरीको बतलाना शुरू करलकै। नतीजा ई होलै कि हिनकों पास एक बड़ों सेना होय गेलै। हिनी अमृतसरे में लौहगढ़ नाम के किलाहौ बनबैलकै। हिनकों जन्मो अमृतसर के बडाली क्षेत्र में होलों छेलै। एक किस्म सें है बताय लें गुरु हरगोविन्द दिल्ली के बादशाह सें कम नै छै, हिनी वहा स्वर्णमंदिर के सामनें अकाल तख्त नाम सें एक सिंहासन बनवैलकै जे अभियो छै।...कोन तखत बनवैलकै ?"

"अकाल तखत ।" तीनो एक्के साथ बोललों छेलै ।

"एकदम ठीक । तें, जानै छौ, गुरु हरगोविन्द जी है सब कैन्हें करी रहलों छेलै ? कि तखिनको मुगल बादशाह जहाँगीर है घोषणा करलें छेलै—कोइयो प्रजा दू फूट सें उच्चों चबूतरा आसन के नाम पर नै बनावें पारें आरो कोइयो घुड़सवारी नै करें पारें। जबें बादशाह कें गुरु द्वारा शिष्य के सैनिक-प्रशिक्षण घुड़सवारी आरो अकाल तख्त के बारे में मालूम

होलै, तें ऊ बौखलाय गेलै आरो गुरु जी कें बंदी बनाय कें ग्वालियर के किला में बंद करी देलकै।''

''जा!'' पंचु के मुँहो सें निकललों छेलै।

''ई ग्वालियर कहाँ छै काका?'' बंटू पुछलें छेलै।

''तें, गुरु जी के सेना कुछ नै करलकै?'' तेतरीं पुछलें छेलै। काका घूमी कें तीनो कें देखलें छेलै। हुनी खुश होलों छेलै कि तीनो मोंन लगाय कें सब कुछ सुनी रहलों छै, तें हुनी कहना शुरू करलकै, ''केना नै करलकै। गुरु जी कें बंदी बनाना छेलै कि हुनकों सेना में हेनों खलबली मचलै कि बादशाह कें ग्वालियर के किला सें बाहर करै लें लगलै। ई ग्वालियर अपने देश के मध्यप्रदेश राज्य में छै।''

''ओ!'' बंटु संतोष के स्वर में बोललै ।

''मतुर गुरु आरो बादशाह के बीच लड़ाय रुकैवाला थोड़े छेलै। गुरु हरगोविन्द के जे रं नाम बढ़लों जाय रहलों छेलै, एकरा सें जली कें जहाँगीर के बाद शाहजहाँ बादशाह नें गुरु कें बंदी बनाय लें एक सेनापति कें भेजलकै मतुर गुरु जी के सेनां ओकरा मारीये तें देलकै, तबें ओकरों सेनाहौ कें भागै लें लगलै। दोसरों दाफी गुरु जी के शिष्य आरो बादशाह के लोगों के बीच एक बाज लैकें ताना-तानी होय गेलै। होलै तें खूब होय गेलै।'' काकां दायां घुस्सा बायां तरत्थी पर जमैतें बोललै।

कि तखनिये पंचु काका दिस इशारा करी तेतरी के कानो में कुछ फुसफुसैलों छेलै आरो तेतरीं हेनों नै करै लें अपनों दायां हाथ लगातारे डोलैलें छेलै । फेनु एक हाथ कें कान के नगीच लानतें मुड़ी हथेली दिस झुकैलें छेलै, जेकरों मतलब 'बाद में' होय छेलै, तें पंचुओ चुप बैठी रहलै।

काकां बिना पीछू देखले बात आगू बढ़ैतें कहतें गेलै, ''बादशाह शाहजहाँ कें लगें लगलै—जों गुरु कें नै रोकलों गेलै, तें मुश्किल हुएँ पारें, से वैं फेनु एक सेनापति कें भेजलकै—गुरु कें बंदी बनाय लें। मतुर गुरु के सेनां ओकरौ मारीये तें देलकै। ई देखी बादशाह के सेना सिनी लगे उड़ौन दै देलकै।'' काकां दोनों हाथ ऊपर करतें कहलें छेलै ।

जे सुनथैं तेतरी, पंचु आरो बंटु नें जोर-जोर सें थपड़ी बजैलें छेलै। काकाहौं खुश होतें कहलकै ''ओकरों बाद बादशाह के जोशे पातरों

होय गेलै। तबें गुरु जी करतारपुर चल्लों गेलै। तोरासिनी के मालूम छौ नी, करतारपुर कहाँ छै आरो कोंन गुरु के निवास असथान छेकै?''

अभी बंटु आरो पंचु याद करै लें माथों नोचिये रहलों छेलै कि तेतरी बोली पड़लै, ''गुरु नामक देव के असथान; जे पाकिस्तान में छै।''

''वाह गे बेटी, कमाल के बुद्धि पैलें छैं! मतर गुरु हरगोविन्द जी वहुँ नै रुकलै आरो हुनी सीधे कीरतपुर आवी गेलै, जे आयकों पंजाब के रूपनगर जिला के एक गाँव छेकै । हिनकों पाँच बेटा में गुरुदित्ता सबसे बड़ों बेटा छेलै, जेकरे दू बेटा में सें हरिराय कें हरगोविन्द जी गद्दी सौंपी कें ज्योति में विलीन होय गेलै।'' एतना कहथैं काका मुँह घुराय कें बंटु सें पुछलें छेलै, ''गुरुदित्ता गुरु जी के बड़ों लड़का छेलै आरो हरिराय गुरुदित्ता के बेटा ?'' तें रिस्ता मे ऊ हरगोविन्द कें की लगलै?''

''पोता।''

''वाह। एकदम सही। तें, गुरु हरगोविन्द जी नें पाँचो बेटा में सें केकरौ गद्दी नै दै कें पोता के दै देलकै। पंचु बतावें पारें—कैन्हें देलें होतै?''

''गुरु जी बेटा सिनी कें पसन्द नै करते होतै।''

''तेतरी, तोहें बताव; की कारण होतै?''

''ऊ सब गद्दी लायक नै होतै।'' तेतरी थोड़ों सकपकैतें बोललों छेलै।

''एकदम ठीक बोललैं। मतर पोता अपनों दादा के सोभाव सें अलग निकललै—एकदम शांत स्वभाव के। कोय किसिम के झंझट सें कोय मतलब नै। यै लेली हिनी सैनिक के संख्या घटाय देलें छेलै। हिनी दादा नाँखी शिकार पर तें जाय मतुर जीव कें मारै नै। घोंर लानी पालै-पोसै। हिनकों हृदय कत्तें कोमल छेलै, तोरासिनी जानै लें चाहवैं?''

जबें सब्भैं एक्के साथें 'हों' कहलकै, तें काका रास खीची कें बैलो कें रोकलकै आरो एकोसी होतें कहें लगलै, ''एक दाफी हिनी बगीचा में घूमी रहलों छेलै, तें हिनकों कमीज सें उलझी कें कुछ फूल टूटी कें गिरी पड़लै। फूल के गिरथै हिनी कानें लगलै। जानै छैं बंटु, कैन्हें?''

''कैन्हें?'' बंटु आचरज सें पुछलें छेलै।

''है रं गिरला सें फूल सिनी कें कत्तें चोट लगलों होतै—यही

सोची कें।''

ई सुनी कें सब अवाक रही गेलों छेलै।

कि तभिये बंटु दिस देखतें काकां कहलें छेलै, ''तबें सोचैं, जबें गाछी पर हनियाय-हनियाय कें ढेपों चलैतें होवैं, तें गाछ के पत्ता-फोंर कें कत्तें चोट लगतें होतै। गाछी कें लगै छै, ऊ तें अलग, जों ऊ ढेपों केकरो माथा सें लगी जाय, तबें की होतै। बच्चा में जे गलती हम्में करै छेलियै, ऊ जल्दिये सुधारियो लै छेलियै।'' कही के काका एक क्षण रुकलों छेलै आरो बंटुए सें फेनु पुछलें छेलै, ''की तोहें देहरादून के नाम सुनले छैं ?'' बंटू 'नै' कहलकै, तें सब्भैं एकेक करी कें 'नै' कही देलकै।

''देहरादून हिमालय परकों जग्घों छेकै। ई नाम कैन्हें पड़लै, ई तें बाद में बतैवौ; पहले ई जानी ले—बादशाह शाहजहाँ के मरला के बाद ओकरों बेटा सिनी में गद्दी लें मार हुएँ लगलै। शाहजहाँ के एक बेटा औरंगजेब भी छेलै, जे चाहै छेलै कि गुरु कें केन्हों कें मुसलमान बनाय देलों जाय; तबें जत्तें भी गुरु के लड़ाकू शिष्य छै—सब मुसलमान होय जैतै, से औरंगजेब नें गुरु हरिराय जी कें दिल्ली बोलैलकै। गुरु तें नै गेलै मतर हुनकों बेटा रामराय वहाँ चल्लों गेलै, वहाँ ओकरों खूब खातिरदारी करी कें मोन-मिजाज बदली देलों गेलै; यहाँ तक कि गुरु नानकदेव के एक पद के अरथ बदली कें ओकरों दोसरों अर्थ बताय कें बादशाह औरंगजेब कें खुश करी देलकै। जबें है बात गुरु हरिराय कें मालूम होलै, तें हुनी बेटा लुग खबर भिजवाय देलकै कि मरला के बादो ऊ हमरों मुँह नै देखें। ई बात सुनी कें बेटा कें बड़ा दुख होलै आरो हिमालय के तराई में जाय कें अपनों डेरा बनाय लेलकै, जे असथाने बाद में देहरादून कहलैलै—डेरा मानी जग्घों आरो दून मानी दोना, दू पहाड़ों के बीच के असथान। बड़ों होभे, तें जरूर जैइयें ऊ जग्घों। की रमणीक जग्घों छै। जे हुएँ, एकरों बाद गुरु हरिराय नें अपनों छोटका बेटा हरिकृष्ण कें गद्दी सौंपी देलकै, जे हरिकृष्ण तखनी पाँचे सालों के छेलै....बंटु सोचैं, हरिकृष्ण पाँचे सालों के उमरी में गुरुगद्दी पर बैठलै। आरो जबें गद्दी पर बैठलै, तें हरिकृष्ण कें तंग करै में ढेर लोगें कोय कमी नै करलकै। बादशाह सें कही कें हुनका दिल्ली बुलाय कें साजिश रचैलकै मतर गुरु जी दिल्ली जाय ले तैयार नै छेलै। बाबूं के सौगंध जे निभाना छेलै।''

एतना कही काका रुकी गेलों छेलै; हौ तें तेतरी टोकलें छेलै, "काका, तबें की होलै ?" तें काका कहनाओ शुरू करलकै, "मतर अंबर के राजा जयसिंह के कहला पर हिनी सब शिष्य कें रोकी कें अपनी माय कृष्ण कौर आरो बीस शिष्य के सार्थें दिल्ली दिस रवाना होय गेलै। दुर्भाग्य देखें, तखनी दिल्ली में खूब जोरों सें शीतला माय के प्रकोप फैली गेलों छेलै। शीतला माय के माने समझैं छैं, तोरासिनी?"

"हों। बोदरी । चेचकवाला रोग।" पंचु बोललों छेलै।

"ठीक कहलैं। हजारो-हजार आदमी पटापट मरें लगलों छेलै। संकट में लोगों कें देखी गुरु हरिकृष्ण लोगों के सेवा में अपनों शिष्यों के साथ लगी गेलै। नतीजा ई होलै, कि हुनियो शीतला माय के शिकार होय गेलै। हुनी दिल्ली के जमुना नद्दी के किनारी अपनों डेरा जमाय ललकै। देखथैं-देखथैं हुनका खूब तेज बुखार आवी गेलै। जबें हुनका लगें लगलै कि आबें हुनकों मिरतु नगीचे छै, तें हुनी तंबु सें बाहर निकली शिष्य सिनी के बीच पाँच पैसा के साथ नारियल फोंल रखी कें ओकरों परिक्रमा करतें कहलकै, 'गुरु बाबा बकाले।' हुनकों कहै के मतलब छेलै कि बकालेवाला ही आबें गुरु होतै। आरो है कहीं कें गुरु हरिकृष्ण जी ज्योति में मिली गेलै। आय यमुना नद्दी के वही ठियां गुरुद्वारा बाबा साहिब बनलों होलों छै। तेतरी, सोचैं जबें गुरु हरिकृष्ण जी गद्दी पर बैठलै, तखनी हिनकों उमिर पाँच सालों के छेलै आरो जबें देह छोड़लकै, तखनी हिनी आठ साल के छेलै। यही उमरी में माय-बाबू के कत्तें ख्याल! आरो एकरौ सें बढ़ी कें विपत्ति में समाज रों सेवा। हेने संतान तें माय-बाबू सार्थें देश-दुनिया लें सूरज बनी जाय छै।"

"काका!" बंटुं काका के ध्यान अपनों दिस खींचतें कहलें छेलै, "डुबकी हाथी बड़ी जोर सें गुरगुरैलौं।" बंटु के बात सुनी काका आरो तेतरी एक्के दाफी खिलखिलाय पड़लै आरो पंचु-बंटु ई देखी कें भौचक कि है बातो पर दोनो हेना कें हँसी कैन्हें पड़लै?

"की बोललैं, बंटु—हाथी गुरगुराय रहलो छै। हाथी गुरगुराय छै कि चिग्घाड़ै छै? खैर, तोहें ठीक याद दिलैलैं। देखैं, गुरु जी के बारे में कहतें-कहतें हम्में दुबकी कें एकदम्मे भूली गेलों छेलियै। फेनु तोरों बाबुओ बासा पर आवीकें तोरों सिनी के बाट जोहतें होतौ। चल लौटै

छियै। कथा कहतें-कहतें देखें हमरा सिनी कटियामो तांय आवी गेलों छियै।'' आरो ई कही कें काकां बैलगाड़ी कें घुमाय लेलें छेलै।

गाड़ी के घुमते काकां पैनों सें दोनो बैल के पुट्ठों छूलें छेलै, ते गाड़ी पहिलका सें तेज दौड़ें लगलों छेलै। गाड़ी हाँकतें बंटु के नाम लैकें काकां फेनु कहलें छेलै, ''बंटु, याद रहलौ, हाथी गुरगुराय के जग्घा में की करै छै?''

''चिग्घाड़ै छै।'' सब्भे एक्के बारगी बोललों छेलै।

''तें, ठीक छै, तोरों सिनी कें आबें एक हेनों कविता सुनाय छियौ कि कोन जानवर, कोन पंछी केना-केना बोलै छै। सुनभैं?''

आरो जबें सब्भे पहिलके नाँखी एक्के साथे 'हों' कहलकै, तें काकाहों एक दाफी खकसतें हुएँ कहना शुरू करलकै :

उल्लू तें घुघुआवै छै,
मुर्गा बाँग लगावै छै।
हिनहिनावै घोड़ा छै,
गड़-गड़-गड़-गड़ सौढ़ा छै।
मूसों करै छै चूँ-चूँ-चूँ,
कुत्ता भूकै भूँ-भूँ-भूँ।
भले कबूतर गुटरू-गूँ,
कुत्ता बच्चा कूँ-कूँ-कूँ।
बेंग सिनी टर्रावै छै,
बाघ मतुर गुर्रावै छै।
सिंह दहाड़ै बड़ा गजब,
झिंगुर झन-झन जेना अजब।
गदहा रेंकै रेंकले जाय,
बकरी संग भेंड़ा मिमियाय।
सुग्गा रटै छै टें-टें-टें,
बत्तख जेना कें-कें-कें।
बैल डकारै, गाय रंभावै,
मक्खी भिन-भिन करलें आवै।
चिग्घाड़ै हाथी की जोर,

कूजै वन-वन बत्तख-मोर।
कानै गीदड़, साँप फुँकारै,
कौआ काँव-काँव गल्लों चीरै।
बिल्ली मौसी बोलै म्याऊँ,
नै पूड़ी, तें मूसे खाँव।

काकां पशु-पक्षी के बोली के नाम बोलै वक्ती ओकरे रँ किसिम-किसिम के बोलिये नै के नाम बोलै रहलों छेलै, किसिम-किसिम के ठोर बनाय सार्थे अंगुरियो सिनी कें चमकाय छेलै, जे देखी रही-रही कें तीनो खिलखिलाय उठै । कविता खतम होलै कि तेतरी बोललै, "काका, ई कविता याद करी कें तें हम्में टोला भरी के सखी कें मात दै देवै। तोहें हमरों सिलोटी पर नै लिखी देभौ!"

"एकदम लिखी देभौं। कल पहलें यही काम करना छै।"

"अच्छा काका, ई बाज कोन चिडियाँ होय छै जै लें गुरु जी आरो बादशाह के आदमी के बीच गुत्थमगुत्थी होय गेलै?"

"पंचु आरो बंटु, तोर्हौ सिनी कें कुछ पूछना छौ?" काकां घूमी कें दोनो सें पुछलें छेलै।

"काका, गुरु हरिसिंह अपनों सेना में खाली घोड़े कैन्हें रखै। की लड़ाय में हाथी काम नै आवै छै, जबेंकि हाथी घोड़ा से बेसिये मजबूत होय छै!"

"की सुन्दर सवाल करलैं पंचु। बंटु तहूँ कुछ पूछ—जों मनों में कुछ शंका छौ। कल पहलें सबके जवाबे देना छै। आय तें बेरे बहुत होय गेलै, नै तें अइये सब सवालों के जवाब दै देतियौं। हौं वहाँ देखें, के आवी रहलों छै।"

"ऊ तें गणेशी काका छेकै।" तीनो हर्षित होतें बोललै।

"आरो काका के हाथो में कुछ दिखावै भी छौ, बंटु?"

"हाथों में एक झोला छै आरो-आरो हों, दोसरों हाथों में एक बड़का ठोंगा!" बंटु तड़ाक सें जवाब देलें छेलै कि कहीं कोय पहले नै बोली दै ।

"बतावें पारैं कि वैंमें की होतै?" काकौं तुरत पुछलें छेलै ।

"है केना कोय जानतै।" पंचूं कहलकै।

"हम्में बताय छियौ, झोला में बौंसी के मूरी-घुंघनी भरलों छै आरो ठोंगा मे घोडमारा के पेड़ा! हों !"

ई सुनथैं तेतरी खुशी के मारे खुली गेलों मुँहो पर दोनो तरत्थी रखी लेलकै आरो पंचु-बंटु के खुशी तें देखथैं बनै छेलै। गदगदी के जेना कोय ठिकाने नै रहें।

"तेतरी, एक बात जानै छैं–सुक्खा घुँघनी गुरु गोविन्द राय कें बड्डी पसन्द छेलै।" काकां कहलकै ।

"है गुरु गोविन्द जी के छेलै?" हिनकों बारे में तें नै बतैलौ, काका?"

"नै बतैलें छियौं, तें जानी ले। हिनी दशमों गुरु छेलै। हो जे हरिकृष्ण जीं ज्योति में मिलै सें पहले कहलें छेलै–गुरु बाबा बकाले। जाने छै ऊ गुरु के छेलै–नौमो गुरु तेगबहादुर सिंह। तखनी तांय बकाले आक्रमण आरो उपद्रव के कारण सुरक्षित नै रही गेलों छेलै, से हुनी वहाँ सें हटी के मारीबाल नाम के एक गाँव खरीदी, वहीं नानकी चक्क बसैलकै–जे बाद में आनन्द साहिब कहलैलै। अच्छा पंचु, तोहें बतावें पारें हरगोविन्द जी के छेलै?" काकां पंचु के पीठ सहलैतें पुछलकै ।

"गुरु जी छेलै।"

"ठीक कहलैं। सिक्ख पंथ के छठमों गुरु आरो गुरु तेगबहादुर सिंह हिनके बेटा छेले–सिक्ख पंथ के नौमों गुरु। तें आनन्दपुर साहिब सें हिनी अपनी माय आरो कनियैन के साथ पूरब राज्य में यात्रा लेली निकली गेलै। आगरा, इलाहाबाद, बनारस आरो गया होतें गुरु तेगबहादुर पटना पहुंचलै, जहाँ हिनी अपनी कनियैन कें सिक्ख संरक्षण में रखी आपने बंगाल, आसाम, ढाका तक गेलै, जहैं हुनका मालूम होलै कि हुनका बेटा होलों छै, ते सीधे पटना लौटी ऐलै।"

"तें, काका वहूं ठां गुरुद्वारा होतै? तेतरी बोललै ।

"छै नी। पटना साहिब के नाम सें विख्यात छै। पटनाहै में गुरु तेगबहादुर जीं अपनों बेटा के नाम गोविन्द राय रखलकै आरो जबें हिनका मालूम होलै कि कश्मीर के पंडित सिनी पर औरंगजेब अत्याचार करी रहलों छै, तें हिनी गोविन्द राय कें लैकें आनन्दपुर साहिब चल्लों ऐलै। वहीं सें औरंगजेब के अत्याचार कें रोकै लें हिनका दिल्ली जाना

छेलै। बात कुछुवो हुएँ पारें छेलै, से हुनी अपनों बेटा कें गुरुगद्दी पर आसीन करलकै। तखनी गोविन्द राय के उमिरे की छेलै—मात्र नौ साल के छेलै। जानैं छैं, तेतरी, नवे साल में गुरु गोविन्द सिंह कोंन-कोंन भाषा के विद्वान होय गेलों छेलै?''

''कोंन-कोंन?''

''संस्कृत, फारसी, गुरुमुखी के। एतन्है नै, हथियारो सिनी चलावै में हिनी पारंगत होय गेलों छेलै। जानै छैं, हिनी उच्च कोटि के कवि छेलै। हिनी खाली गुरुमुखीये में नै, फारसी आरो ब्रजभाषाओ में कविता लिखलें छै, ई भाषा सिनी के तें तोरासिनी अभी नामो नै सुनलें होभैं। कविसिनी सें हिनका एतन्हैं संगत छेलै कि हिनकों दरबार में बावन कवि के जमावड़ा बनले रहै। गुरु गोविन्द जीं ही खालसा पंथ रों नींव रखलें छेलै। खालसा मानी बुझलैं, बंटु? एकरों मानी होलै शुद्ध। आरो सिक्ख पंथ के अनुयायी लें पाँच चीज के होना जरूरी करी देलकै। जानै छैं ऊ की-की छेकै? ऊ छेकै—केश, कंघा, कारा, कचेरा, कृपाण। कारा, कचेरा, कृपाण बुझलैं, पंचु?''

''नै।''

''कारा मानी लोहा के बनलों कड़ा, कचेरा मानी कच्छा आरो कृपाण मानी बड़ों छूरी रं छोटों तलवार। बाद में पिताहै नाँखी न्याय के रक्षा करतें हिनियो नांदेड़ में अपनों देह छोड़ी देलकै। ई नांदेड़ कहाँ छै, तेतरी बेटी—जानै छैं? ई महाराष्ट्र में गोदावरी नद्दी के किनारा में बसलों शहर छेकै। एक बात आरो जानी ले, नांदेड़ में जे सचखंड गुरुद्वारा छै—हौ महाराजा रणजीत सिंह के कहला पर हुनके मित्र सिकन्दर जाह, मीर अकबर अली खान, आसिफ जाह तेसरों नें बनवैलें छेलै। बस नांदेड़ हजूर साहिब सचखंड गुरुद्वाराहै अभी तांय नै जावें पारलों छियै। पटना साहिब में ते दू-दू दाफी माथों टेकी ऐलों छियै लेकिन नांदेड़ भी जाना छै आरो होलै तें यहा साल। जाय के मोंन तें केरल के हरिपल्ली गजमेलाहौ करै छै, मतर नै जैवै । बाप रे, बाप, तखनी दक्खिन भारत में की गरमी पड़ै छै, चैत खतम हुऐ पर रहै छै आरो बैशाख शुरू, यानी फरवरी-मार्च के महीना, ऊ मेला में हाथी तें खूब सजैलों जाय छै, पचास-पचास सजैलों हाथी के पैरेड, किसिम-किसिम के पाँच रं बाजा, मतर हौ गरमी में जे रं

हाथी सिनी परेशान होय जाय छै, ओकरों दिस केकरो की ध्यानो जाय छै? यही लेली मोंन रहत्हौं, हुन्नें मोंन नै जाय छै । तोरा सिनी जानिये गेलों छैं–हाथी कें कत्तें गरमी लगै छै । आदमी कत्तें बेरहम होलों जाय रहलों छै! जे हाथी कें हमरों पुरखें गणेश जी समझी पूजतें रहलै, आय ओकर्है बकरा-पाठा समझै छै; धरती पर विनाश फूटै वाला छै; फुटिये रहलों छै!"
काका कें लगलै कि बातों सें हुनी भटकी रहलों छै, तें बात बदलै के खयालों सें हुनी झट सना एकटा फेंकड़ा पढ़लकै :

कत्तो अच्छा आलूदम
पेट बचाय कें कम्मे कम
ढम्मक ढम,
ढम्मक ढम।

कि तखनिये डुबकी के फेनु जोरदार शंखवाला आवाज होलै।

"तें एकरों मतलब छै कि डुबकी हमरा सिनी कें देखी लेलें छै। जखनी हमरासिनी चललियै–तखनी तें ई घोर नीनों में छेलै।"

"नीनों में कहाँ छेलै, काका। ऊ तें एकदम शांत ठाढ़ों छेलै।"

"यहा तें नै बुझवैं, जबें हाथी इस्थिर-शांत ठाढ़ों दिखें, तें समझी ले कि ऊ झपकी लै रहलों छै। एतन्है नै, ऊ खड़े-खड़ चार घंटा तांय झपकी लियें पारें। हमरा सिनी कें बासा सें चल्लो दू घंटा सें बेसी होय चल्लों छै आरो डुबकी घंटा भरी पहिले सें झपकी लै रहलों छेलै। चल, हमरो सिनी बासा तें पहुँचीये गेलियै। हड़बड़ाय कें नै उतरना छै।"

मतुर काका के कहला सें की, गाड़ी के रुकना छेलै कि पहले बंटु ओकरों पीछू पंचु हेनों कुदकी कें नीचे ऐलै; जेना दू गज के ऊँच्चों दीवारी सें धोंस देलें रहें। मतर तेतरी तब तांय नै उतरलै, जब तांय नीचें उतरी कें काकां ओकरा उतारी नै देलकै।

तीनो के नीचें उतरना छेलै कि सब उछल्लों-कुदलों बासा लुग पहुँची गेलै, जैठां गणेशी काका अभियो दोनो हाथों में झोला आरो ठोंगा होन्है लेलें चौकी पर गोड़ लटकैलें बैठलों छेलै। बैलों के घंटी के आवाज सुनथैं मँहगीयो धड़फड़ाय कें उठी गेलै, उठलों तें छेवे करलै, भले डुबकी के चिग्घाडवो सुनी कें जामुनी गाछी के नीचे आँख बंद करलै ओघरैले रहलै । घंटी के आवाज सुनलकै तें उठी बैठलै; गमछी झाड़लकै आरो

गणेशी लुग आवी गेलै ।

बैल आरो गाडी कें ओकरों-ओकरों जग्घा पर पहुँचाय कें जबें काका लौटलों छेलै, तें हुनी छोटों-छोटों छों केला-पत्ता काटलें ऐलों छेलै—एकदम धोलों-धालों, साफ-सुथरा। नगीच आवी कें चौकी पर छवो केला-पत्ता ई कहतें हुएँ बिछाय देलें छेलै, "आबें बुझलैं नी गनेसी कि हमरों बाबूं कैहिनें एत्तें बड़ों चौकी बनवैलें छेलै कि वखत-कुवखत दसो आदमी एक्के चौकी पर बैठें सके।" फेनु गणेशी दिस देखते कहले छेलै, "आबें इंतजार कथी के। बस लंगर शुरू। सब पत्ता पर मूरी-घुघनी हिसाबे सें दै दैं। खाली ख्याल रहे कि एक्को अन्न बर्बाद नै जाय। अन्न तें भगवान समान होय छै, देह के रक्षा करैवाला। आरो पेड़ावाला ठोंगा हौ दिस रखी दैं। हौ तेतरी के घोंर जैतै।"

सब कुछ होनै कें होलों छेलै, जेना-जेना काकां कहलें छेलै। काकां हाथ में कुछ अन्न उठाय कें आँख बंद करी कें कुछ बुदबुदैलों छेलै आरो जबें हुनी मुँहों में ऊ कौर देलें छेलै, तें तेतरी, बंटु, पंचुओ के हाथ दनादन मूरी-घुँघनी सानै पर लगी गेलों छेलै। एक अजीब भितरिया होड़ तीनो में चली गेलों छेलै कि पहिलें के मूरी-घुँघनी ओरावें पारें। काका, मेंहगी, गणेशी के हँसी रुकें नै पारलै जबें तीनो के सिसुऐवों-खैवों साथे-साथ चलें लगलों छेलै।

।। दस ।।

"की दादा, आय देखै छियौं खादी के गंजी-धोती के जग्या में सिलिक के कुर्त्ता आरो साफ-दगदग दगदग धोती पिन्ही कें बैठलों होलों छौ। कोय बाहरी आदमीयो आवैवाला छै की?" दस कदम दूरे सें मंहगी पुछलें छेलै आरो बाबू कें पिछुऐतै आवी रहलों तेतरी, बंटु-पंचु एकेक करीकें काका के अगले-बगल पालथी मारी चौकी पर बैठी गेलों छेलै।

"देखै नै छैं—आय केन्हों तीनो जमी कें हमरा सें सवाल करै लें

बैठलों छै। आय हमरों परीक्षा छेकै, तें साफ-सुथरा लिबासे में नी आना छेलै। जों तोरों मनों में कोय किसिम के सवाल छौ, मँहगी, तें आय तहूँ पूछें पारें। आय हमरों परीक्षा होय जाय कि हम्में कत्तें जानै छियै आरो कत्तें नै। तें, सबसे पहिलें बंटू बोलें—तोरो की सवाल छेकौ?'' काका बैठले-बैठले पीठ सीधा-सीधा बोललै ।

''जे कल्हो पुछलें छेलियौं कि बाज कोन चिड़ियाँ होय छै, जेकरों कारण गुरुजी आरो बादशाह के आदमी आपस में भिड़ी गेलै?'' बंटू झट सना बोललै।

''तोरों सवाल, पंचु?''

''गुरु तेगबहादुर जी घोड़े कैन्हें लानै के बात कैन्हें करै? की घोड़ा-हाथी सें ऊ बेसी ताकतवर होय छै? हुनी भुजलों घुंघनी कहाँ से मँगावै छेलै?''

''ठीक छै। आबें तोरा की पूछना छौ, तेतरी ? पूछ!'' काकां तेतरी के माथा पर हाथ रखतें बोललै।

''काका, तोरों एत्तें उमिर होय गेलौं आरो डुबकियो के। तहियो तोहें एत्तें काम करै छौ आरो डुबकी अभियो रोज दू-तीन कोस चली लै छै—थक्कै नै छौ?''

तेतरी के सवाल सुनी कें काकां हँसतें हुएँ कहलकै, ''थकतें तें डुबकियो होतै आरो हम्मू थकीये जाय छियै, मतर जिनगी बैठै लें थोड़े होय छै, नानकी। हाथी आरो मरद बैठलों, कि गेलों।...अच्छा मँहगी, आय तहूँ कुछ हमरा सें पूछें, आयको चौपाल यही सब में बीतें!'' काका के चेहरा पर चमक आय बेसिये छेलै ।

''हम्में की पुछवौं दादा! जों पुछनाहै छै, तें ई बतावों—की तहूँ बच्चा में शैतानी करै छेलौ। यें तीनो तें माय कें परेशान-परेशान करी मारै छै।''

''आबें तें केकरौ कुछ नै नी पुछना छै? तें, हम्में एकेक करी कें सबके उत्तर दै छियौ। पहिलें तें बंटु के सवाल के उत्तर। हेनाकें तें चील भी शिकारी पक्षी होय छै मतर बाज सें बढ़ी कें नै। होन्हौ कें चील के माथे नै, लोलो छोटों होय छै, जबकि बाज के दोनो चीज बड़ों। पक्षी में बाज चीते-रं धरती पर दौड़ें पारें आरो सरंग सें घासों में बैठलों बगरों

तक कें देखी लिएँ पारें; हेनों आँख तेज होय छै! एकरों मोटों-मोटों टांग एत्है मजगूत होय छै कि बकरी के बच्चो पंजा में लैकें उड़ें पारें।'' काकां दोनो हाथ आरो मूड़ी ऊपर करतें कहलें छेलै ।

''बाप रे बाप!'' तेतरी कें जना कँपकँपी लगी गेलों रहें।

''कटियो टा गलत नै कही रहलों छियौं। बाज कें तोहें पिंजड़ा में बंद रखै नै पारों; पिंजड़ा तोड़ी कें बाहर आवी जाय छै आरो नै तें ई केकरो पकड़लों शिकारे के खाय छै। पक्षी में शेर समझें।'' बाज कभियो एक जग्घा में घोसला बनाय कें नै रहें आरो कि जो हवा दक्खिन दिशा सें आवी रहलों छै, तें उत्तर दिश नै उड़तै। हवाहै दिस मुँह करी दखिने दिस उड़तै—तहीं सें तें गुरु गोविन्द सिंह प्रतीक रूपो में बाज अपनों पास रखै छेलै।''

''ओ, ई बात छै ।'' तेतरी बोललै ।

''एकरों बारे में आरो बात जानें। एकरों सिर में टेढ़ों लोल आरो पंख बढ़तें-बढ़तें एत्तें बढ़ी जाय छै कि नै तें यैं शिकार करें पारै छै, नै बेसी ऊपर उड़ै पारै छै।''

''आय ! तबें?'' तेतरीं फेनु पुछलें छेलै।

''तबें वैं पत्थर पर चोंच पटकी-पटकी कें लोल तोड़ी लै छै आरो अपने लोलों सें पंखो सिनी के नोची लै छै। ताकि शिकार करें पारें, उड़ें पारें।''

सुनथै तेतरी फेनु सिहरी उठलै और पुछलकै, ''काका, हेनों करै वक्ती दरद नै करतें होतै?''

''की कहै छैं, दरद नै करतें होतै। एकदम कलपित्तों होय जैतै होतै मतर हेनों नै करतै, तें भूखे नै मरी जैतै। आबें पंचु तोरों सवाल के उत्तर। सब ध्यान लगाय कें सुनियों। है तें देखले सें कोय कहें पारें कि हाथी घोड़ा सें बेसी बरियों होय छै मतर घोड़ा हेनों फुर्तीला आरो छलांग लगावैवाला नै हुएँ पारें; कभियो नै हुएँ पारें। एकरा हम्में इतिहास के दू-तीन घटना सें समझाय के कोशिश करै छियौ। तोरा सिनी सिकन्दर के नाम तें सुनलें होभैं?''

''हों, बहुत बड़ों विजेता छेलै, जे राजा पुरु कें हराय देलें छेलै।''

''माथों हरैतै। ई सब विदेशी लेखक के बदमाशी छेकै। कहलों

तें यहू जाय छै कि ऊ एक हरियानवी बहादुर के कटार सें हेनों घायल होलै कि गांधार में ही ओकरों कहीं पर मौत होय गेलै। लेकिन बात यहाँ हाथी के ताकत के छै, तें कै लेखक यहू लिखै छै, कि जबें राजा पुरु कें बंदी बनाय लेलकै, तें मगध यानी पटना के राजा धनानंद सिकन्दर के सम्मान लेली अस्सी हजार घुड़सवार आरो सत्तर हजार विध्वंशक हाथी लैकें तैयार छेलै। तें एकरा सें पता चलै छै कि युद्ध लेली हाथी विध्वंश करै वास्तें तें एक्के हाथी काफी होय छै। किताबो में लिखलों छै कि महात्मा बुद्ध के चचेरों भाय देवदत्त बुद्ध सें बड़ी दुश्मनी राखै छेलै आरो मगध के राजा अजातशत्रु ओकरों प्रिय मित्र छेलै। ओकरै से एक विध्वंशक हाथी लैकें ओकरा ताड़ी पिलवैलकै, जैसें ऊ आरो उमताय गेलै। बुद्ध जन्नें सें आवी रहलों छेलै, वही रस्ता के लोगों कें खुचलें-खाचलें बुद्ध दिस बढ़लै।''

''हाय बाबू! तबें की होलै?'' पुछला के बाद एक पल लेली तेतरी के मुँह खुल्ले रही गेलै ।

''होतै की, कुछ नै । बुद्ध कें देखथैं हाथी नेंगड़ी हिलावें लगलै। बुद्ध हेनों-तेन्हों महात्मा थोड़े छेलै; भगवान कहावै छै। जे भी हुएँ। आबें तोंही सोचें, जबें पटना के राजा के पास ओत्तें घुड़सवार आरो ओत्तें हाथी छेलै, तें जे राजा पुरु के राज सिंधु आरो झेलम तक विस्तृत छेलै, ओकरों सेना में कत्तें हाथी होतै! लड़ाय के तें लंबा कहानी छै। इखनी एतन्है समझें कि सिकन्दर के पास अरेबियन घोड़ा के संख्या बेसी छेलै, जेकरा पर बैठलों सैनिक फुर्ती सें हिन्नें-हुन्नें सें तीर चलाना शुरू करी देलकै, तें पुरु के हाथी सिनी के बीच भगदड़ मची गेलै; नै तें जे रं हाथी सिकन्दर के सेना कें मूली, गाजर नाँखी गोड़ों सें भरता बनाना शुरू करलें छेलै कि मत पूछें। यही बात कें समझतें हुएँ महाराणा प्रताप हाथी पर सें नै, अपनों चेतक घोड़ा पर सवार होय कें हल्दीघाटी में लड़ाय लड़ी रहलों छेलै। अकबर बादशाह दिस सें मान सिंह हाथी पर सवार छेलै आरो राणा प्रताप अपनों चेतक घोड़ा पर। बतैलियौ नी, घोड़ा फुर्तीला होय छै, से महाराणा के चेतक घोड़ा छलांग मारी कें मानसिंह के हाथी के माथा तक चल्लों ऐलै आरो राणा प्रताप के आक्रमण सें मान सिंह धड़ाम सें नीचें गिरी पड़लै।'' ई बात कें काकां अपनों जाँघ पर जोर के

पंजा बजाड़तें कहलें छेलै, फेनु एक पल रुकतें कहना शुरू करलकै, "हेना कें राणा प्रताप के पास चेतक घोड़े नाँखी एक हाथियो छेलै, जेकरों जिकिर नै होय छै। जेना घोड़ा के नाम चेतक छेलै, होनै कें हाथी के नाम छेलै—रामप्रसाद। ऊ हाथी पर कोय पिलवान नै होय छेलै। हल्दीघाटी के भीषण लड़ाय में अकबर के सेना नें ओकरों बहादुरी देखले छेलै। पचहत्तर-अस्सी सेर के हथियार ओकरों शरीर सें बंधलों रहै। किताब में लिखलों छै, वैं हल्दीघाटी के लड़ाय में तेरह हाथी कें अकेले मारी देलें छेलै। होना कें जंगलो में कोय हाथी हाथी पर जल्दी आक्रमण नै करै छै। बड़ी मुश्किल सें अकबर के सेना नें प्रताप के ऊ हाथी के बांधें पारलकै। यै वास्तें सात हाथी पर दू-दू पिलवान बैठलै आरो चारो दिस सें ओकरा घेरलों गेलै। तबें ऊ बंदी होलै। मतुर देखों ऊ हाथी के स्वामीभक्ति! अठारो दिन तांय अकबर के बहुत चाहला के बादो मुँहों में एक खोंर नै रखलकै—अत्याचारो सहै लें पड़लै आरो सतरह दिन बाद ऊ गिरलै, तें फेनु उठें नै पारलै।"

कनौजिया काका के एतना बोलना छेलै कि तेतरी, पंचु, बंटु के नजर डुबकी दिस चल्लों गेलै, जे मजा सें सूँढ़ उठाय कें आमी गाछी के ठार तोड़ै में मशगूल छेलै।

"हाथी बहुत संवेदनशील होय छै।" काकां आगू के बात शुरू करतें बोललै, "खाली अपने मालिके के प्रति नै, अपनों परिवार के आरो हाथी वास्तें भी। देखलों गेलों छै, जंगल में जों दल के कोय हाथी मरी जाय छै, तें सब वहाँ पर इकट्ठा होय कें शोक मनाय छै। खैर, हम्में तोरासिनी कें बताय रहलों छेलियौं कि हाथी कत्तो मजबूत हुएँ, घोड़ा नाँखी फुर्तीला नै हुएँ पारें। जानै छैं, जखनी हल्दीघाटी के लड़ाय-मैदान में राणा प्रताप दुश्मन सें घिरी गेलै, तखनी चेतक घोड़ा छब्बीस फीट चौड़ा नाला कें छड़पी गेलों छेलै, जे देखी कें दुश्मन सेना कें मिरगी आवी गेलै आरो की ! तखनी चेतक पर कवच, भाला-तलवार लैकें हथियारों के भार दू सौ सेर सें कम तें नहिये छेलै। चार मनों सें कुछ बेसिये समझें। तहियो वैं छलांग मारी देलकै। ई काम की हाथी करें पारतियै? यही सें गुरु तेगबहादुर सिंह सिर्फ घोड़ाहै के माँग रखलें छेलै। फेनु यहू बात छेलै कि औरंगजेब के ई आदेश छेलै कि बादशाह के आदमी छोड़ी

कें कोय घोड़सवारी नै करें पारें। एकरो गुरु जी कें गुस्सा छेलै।''

''काका, तोहें कत्तें-कत्तें बात जानै छौ। कौनी इस्कूलो में पढ़लों छेलौ?'' पूछै वक्ती तेतरी के चेहरा रही-रही कें चमकी जाय ।

''जोंन इस्कूली में तोरासिनी पढ़ी रहलों छौ। खाली मोंन लगाय कें पढ़ना छै। माउन्टेसरी इस्कूली में पढ़तियै, तें माउन्ट सें ससरी कें टांग-गोड़ तोड़ी लेतियै । सब जानतियै, खाली घरे के बात नै...हों, तें पंचु के एक आरो छोटकुनिया सवाल। गुरु गोविन्द जी के घुंघनी कहाँ सें आवै छेलै? तोहे की बुझै छैं—बौंसी आकि हंसडीहा से हुनकों वास्ते घुंघनी आवै छेलै। पटनाहै के राजा फतहचंद सेनी आरो हुनकी रानी, गोविन्द राय कें बेटाहै नाँखी मानै छेलै आरो हुनकै कन जाय के रोजे तललों चना के घुंघनी खाय छेलै, हुनी।''

''ओ!'' संतोख के स्वर में पंचु बोललै।

''तें, आबें रही गेलै तेतरी के सवाल। एकरों जवाब तें एक कथा सें ही दिएँ पारौं। मोंन लगाय कें सुनियें—कौशल राज के कहानी छेकै। तखनी भगवान बुद्ध कहीं कौशल राजे में घूमी-घूमी उपदेश दै रहलों छेलै। वही समय में वहाँ एक बड़ी बलवान हाथी छेलै, जेकरों नाम बुद्धरेक छेलै।'' आरो कथा रोकी कें पुछलें छेलै, ''की नाम छेलै?''

तें एक्के साथ तीनो जोर सें बोललों छेलै ''बुद्धरेक।'' तेतरी, पंचु, बंटु साथे मँहगियो हौले सें बोललों छेलै, ''बुद्धरेक।''

''तें, बुद्धरेक कत्तें-कत्तें युद्ध में दुश्मन कें भागै लें लाचार करी देलें छेलै। जेन्हैं युद्ध के मैदान में सिंघी आरो नगाड़ा बजै कि बुद्धरेक के माथा पर निसाँव चढ़ी जाय आरो दुश्मन कें सूँढ़ो में लपेटी-लपेटी गेंदे नाँखी उछालें लगै। समय बितलै; वहीं हाथी एक दाफी कोय दलदली पोखर में फँसी गेलै। राजां जे ओकरा बहुत मानै छेलै, कत्तें-कत्तें महावत कें लगैलकै—ओकरा ऊ पोखर सें निकालै लें मतर सब बेकार। आखिर में राजा ऊ हाथी के पुरनका पिलवान के खोजारी करवैलके, जे भगवान बुद्ध के भक्ति में रहें लगलों छेलै।

''जबे भगवान बुद्ध कें सब बात मालूम होलै, तें हुनी ऊ पिलवान कें कहलकै कि तोहें अभिये जायकें हाथी कें दलदल सें निकालों। जबें भगवान के आदेश होलै, तें ऊ वहाँ से पोखर दिस निकली

गेलै। कहाँ जाय कें देखै छै कि बुद्धरेक भरी टाँग दलदल मे धँसलों होलों छै, जे देखी कें ऊ महावत जोर सें ठहाका मारी कें हँसी पड़लै।''

''ऊ कैन्हें काका?'' तेतरीं टोकलें छेलै।

''आगू सुन नी। ऊ पिलवान जानै छेलै कि केना हाथी में जोश भरलों जावें सकें छै, से वैं नगाड़ा-सिंग्घी बजावैवाला कें बोलैलकै आरो जोर-जोर सें नगाड़ा-सिंग्धी बजावै लें कहलकै। हुन्नें नगाड़ा-सिंग्धी के बजना छलै कि हिन्नें बुद्धरेक पोखरी के दलदल सें बाहर निकली जोर-जोर सें चिग्घाड़ें लगलै। कैन्हें कि नगाड़ा आरनी के आवाज सुनथैं ऊ उमताय जाय। ओकरा नै अपनों कमजोर देह के ख्याल रहै, नै कमजोरी के—बस वहा-रं; जेनाकि तोरासिनी के साथ हँसतें-बोलतें हमरा नै अपनों बुढ़ापा के ख्याल रहै छै, नै अपनों कमजोरी आकि थकान के। जानै छै; कोयल कुहू-कहू बोलै छै—तभिये आम पकी के मीट्ठो होय छै। हमरों जिनगी में मिठास आरो उमंग के कारण तें तोरेसिनी के हँसी-ठिठोलीये नी छेकै, नानकी!''

''अच्छा काका, तोहें हमरा नानकी कैन्हें कहै छौ?''

''यैलें कि तोरो जनम ननिहर में होलों छौ। ननिहर में जनमैवाला नानक आरो जनमैवाली नानकी!'' काकां जोर से चुटकी बजैतें कहलें छेलै।

''तें, गुरु नानक देव नानाहै घरों में जनम लेलें होतै।'' तेतरी लगले पुछलकै ।

''बस हेने बुझें। गुरु नानक के बहिन के नाम नानकी छेलै, कैन्हें कि वहू नानिये घरो में जनमलों छेली।''

''आबें समझी गेलियै, काका।'' कही के तेतरी सीधा होयकें बैठी गेलै।

''आबें आखरी में ऊ, जे तोरों बाबू पुछलें छौ।'' काकां तेतरी के माथा पर हाथ रखतें कहलकै आरो बिना कुछ कहले ठठाय कें हँसी पड़लै। रुकलै, तें बोललै, ''आबें तोरासिनी पुछवैं कि कैन्हें हँसलौ ? ऊ बाते हेनों छै कि बिना हँसलें हम्मे रहै नै पारौं। आबें तोरासिनी सुनें—तखनी हम्में तेतरी सें बस कुछ बड़ो होवै; कत्तो कम, तें नौ-दस साल के जरूरे । बुद्धि में तेतरीये-रं पाकलों!''

ई सुनी कें तेतरीं दोनो भाय दिस देखतें भीतरे-भीतर भरी मूँ हँसलों छेलै।

''तें हम्में की कही रहलों छेलियै कि तखनी हम्में नों-दस साल के जरुरे होभै। बाबू पुरैनियाँ में नौकरी करै छेलै आरो हफ्ते-हफ्ते हुनी जबें घोंर आवै, तें सबकें एकेक इकन्नी दै।'' ई कही कें कनौजिया काका फेनु ठहाका मारी कें हँसी पड़लों छेलै; हँसी थमलै, तें फेनु सें कहना शुरू करलकै; ''हम्मे पाँच भाय-बहिन छेलियै यानी चार बहिन में एकलौता हम्में, भाय। पैसा हेनों चीज छेकै कि माँगला पर तें देतियै नै, से हम्में चारो बहिन सें अलग-अलग कहलियै—हम्में अपनों इकन्नी जबें माँटी में रोपी देलियै आरो आठे रोजों के बाद खोदी कें देखलियै, तें वैठां झुक्कों-झुक्कों इकन्नी फरी गेलों छै। तोरो सिनी यै-यै ठियां माँटी में गाड़ी दैं; फेनु एक इकन्नी के बदला दस-दस इकन्नी फरी जैतौ। बहिन तें बहिने होय छै; हमरों बात पर विश्वास करी अपनों-अपनों इकन्नी वहाँ-वहाँ गाड़ी देलकै। गाड़लें छेलै हमरे सामना, से राती चुपचाप वहाँ जायकें चारो इकन्नी निकाली कें खद्दो भत्ती देलियै। छों दिन तांय बाजार में हमरो खूब मूरी-घुंघनी चलतें रहलै। जबें बाबू ऐलै, तें बहिन सिनी बतेलकै कि जल्दीये ओकरासिनी कें एक इकन्नी के बदला ढेरे इकन्नी मिलैवाला छै आरो हमरों बुद्धियो बारे में सब बात बतैलकै। सुनथैं बाबू के गोस्सा सीधे मगजों पर चढ़िये तें गेलै । माँटी खोदलों गेलै मतर वै ठियां कुछ होतियै तबें नी!''

ई कही कें काकां अपनों एड़िया पर घाव के लंबा चेन्हों देखैतें बोललों छेलै, ''हौ दिन बाबू सें जे मार पड़लों छेलै कि पैसाताला गाछ के नामे सें डोंर लगें लागै।'' कनौजिया काका के ई कथा सुनी कें पंचु, बंटु, तेतरी जे भीतरे-भीतर हँसी रहलों छेलै; मार खाय के बात सुनी कें खुली कें हँसी पड़लै।

कि तखनिये डुबकी सूँड़ कें, साँपो के फन नाँखी उठाय कें शंख वाला आवाज करलकै, जे सुनी काकां कहलकै, ''देखैं, डुबकी के भी हँसी आवी गेलै आरो मँहगी तोहें भीतरेभीतर मुस्की रहलो छैं; लालशाही-रं। ठीक छै, ठीक छै। आय तोरों सिनी वास्तें कजरेली सें पच्चीस ठो लालशाही मँगवैलें छियै। पूरे घर लेली आरो घरे जाय कें खाना छै। फेनु

कल सें तें तोरो सिनी के इस्कूलो खुली रहलों छौ। मतुर जबें मोंन करौ, जखनी मोंन करौ, आवी जइयैं। आरो हों, लालशाही खाय कें जरुरे बतैयैं कि ई बेसी मजेदार लगलौ कि पैसा रों गाछ रोपैवाला हमरों बुद्धि।'' ई कही कें कनौजिया काका फेनु अपनों जोर के हँसी नै रोकें पारलकै । बंटु, पंचु, तेतरी आरो मँहगी के निकलला के बादो काका के सौंसे देह पुरानों बातों कें याद सें गुदगुदैतें रहलै।''

■■